बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-121 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | मई 2024 | मूल्य - 5 रूपए

भीषण गर्मी का प्रकोप बच्चों पर कर रहा प्रहार, बढ़ती तपन से बच्चे हुए परेशान

रिपोर्टर काजल, हंसराज, राज किशोर, किशन

पूरा देश इस वक्त भीषण गर्मी के चपेट में है, गर्मी अपना तापमान हर कोने में फैला रही है परंतु इस बढ़ते तापमान और गर्मी में सड़क एवं कामकाजी बच्चों के क्या हालात है? क्या वे इस बढ़ते तापमान व गर्मी से स्वयं को असहज महसूस कर रहे हैं? क्या उन्हें अपने कामकाज में गर्मी से अनेक रुकावटों का सामना करना पड़ रहा है? इन्ही सब बातों को संज्ञान लेने हेतु बालकनामा के पत्रकारों ने अलग-अलग स्थान पर दौरा करने के दौरान बढ़ती गर्मी को लेकर हर एक कोने में कामकाजी बच्चों के पास पहुंचे और बढ़ती गर्मी को लेकर कामकाजी बच्चों से जाना कि उन्हें गर्मी से अपने दैनिक जीवन में क्या-क्या रुकावटें आ रही है? नोएडा सेक्टर 115 में रहने वाले काबिल (परिवर्तित नाम) ने बताया की हम नोएडा में अपने माता-पिता के साथ किराए के कमरे में रहते हैं। हमारे घर में पांच सदस्य हैं जिसमें दो भाई, एक बहन और माता-पिता हैं, माता जी घरों एवं कोठीयों में घरेलु कार्य करने के लिए जाती हैं और पिताजी फैक्ट्री में कार्य करने के लिए जाते हैं। इसके अलावा बहन स्कूल जाती है और घर पर रहती है, हम भी स्कूल जाते है और स्कूल से आने के बाद गली-गली जाकर बर्फ का गोला बेचने का कार्य करतें हैं। दोपहर के दो बजे से लेकर शाम के सात बजे तक हम सड़कों पर बर्फ का गोला बेचते हैं। यह बर्फ का गोला हम छः महीने से लगातार बेच रहे हैं क्योंकि माता-पिता जो पैसे कमा कर लाते है उन पैसों से घर का खर्च चलाने में काफी मुश्किलें होती हैं यहाँ तक की घर का किराया देना भी काफी मुश्किल हो जाता है। पिताजी महीने के लगभग आठ हजार रुपए कमाते है और माताजी महीने के लगभग पांच हजार रुपए कमा कर आती हैं। इन पैसों से भी पूरे परिवार का गुजारा नहीं हो पाता इस कारण हमें सड़कों पर गर्मी में गोला बेचने के लिए निकलना पड़ा, हमारे पास एक बड़ी सी रेहडी है और एक बड़ी सी पेटी जिसमें बर्फ रखी जाती है और बर्फ में रंग डालने के अलग-अलग रसीले रंग रखे जाते हैं। बर्फ को बारीक करने वाली एक मशीन भी है जिस पर बर्फ को घिसते हैं और वह बारीक हो जाती है। जब हम घर से निकलते हैं तो इतनी तेज धूप होने के कारण धूप शरीर पर चुभती है और इस कारण पूरा शरीर पसीने से तर-बतर हो जाता है। रेहडी खींचना भी काफी मुश्किल हो जाता है जिस कारण गांव की हम ऐसी गलियों में जाते हैं जहां पर छांव हो परंतु धूप के कारण बड़ी समस्या होती है कि जब हम सड़कों पर घूमते हैं तो बर्फ पर धूप पड़ती है जिससे बर्फ अपने आप ही अंदर ही अंदर पिघल जाती है जिसके कारण काफी नुकसान होता है। हमें जितनी परेशानियों का सामना करना पड़े हम कर लेंगे क्योंकि यदि हम धूप को देखेंगे तो ना ही बर्फ का गोला बिकेगा और ना ही पैसे आएंगे और घर का खर्चा चलाने में और भी काफी मुश्किलें बढ़ जाएगी।

बढ़ते तापमान व गर्मी के बारे में और जानने के लिए पत्रकार जयपुर के बच्चों से मिले, जिसके अंतर्गत रचना (परिवर्तित नाम) ने बताया की वर्तमान में हम माता-पिता के साथ जयपुर में किराए की बस्ती में रहते हैं। हमारे माता-पिता सड़कों पर झाड़ू लगाने का कार्य करते हैं। वर्तमान में हम विद्यालय भी जाते हैं और कक्षा चौथी में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, हम सुबह के छः बजे से आठ बजे तक अपने माता-पिता के साथ एक मार्केट में जाकर लोगों की दुकानों के बाहर

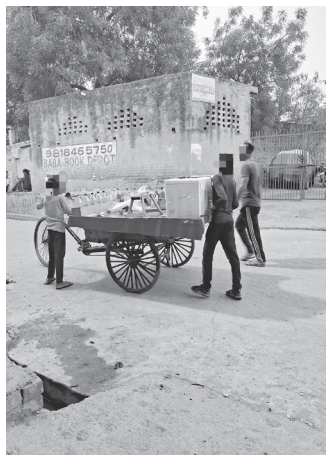

और दुकान के अंदर झाड़ू लगाने का कार्य करते हैं जिससे हर एक दुकान से महीने के दौ सौ रुपए मिल जाते हैं। स्कूल से आने के बाद हमें शाम के समय भी झाड़ू-पोछा लगाने जाना पड़ता हैं जिस दिन हम विद्यालय नहीं जाते तो उस दिन हमें और समय तक यह कार्य करना पड़ता है वर्तमान में इतनी तेज धूप हो रही है जब हम सड़कों पर झाड़ू लगाते हैं तो कमजोरी महसूस होने लगती है और अपने आप चक्कर आ जाते हैं तब भी हमें वह सहन करके यह कार्य करना ही पड़ता है। हम झाड़ू लगाने का कार्य करते हैं इस कारण कई बार लोग हमसे घिन भी करते हैं। हम बढ़ती गर्मी को देखकर अपने घर से पानी की बोतल लेकर आते हैं परंतु इतनी तेज धूप होने के कारण पानी खत्म हो जाता है जब हम किसी अन्य व्यक्ति या दुकानदारों से पानी मांगते हैं तो वह देने में भी घृणा करते हैं और बड़ी मुश्किल से पानी देते हैं। दिल्ली की बस्ती में रहने वाले 8 वर्ष के रोहन (परिवर्तित नाम) ने बताया की बढ़ती गर्मी हर छः महीने में हमारे जीवन में एक कहर बनकर आती है जो हर छः महीने में हमें सताती है। हम अपनी बस्ती में रहते हैं, बस्ती काफी बड़ी है परंतु स्कूल से आने के बाद बस्ती के अंदर रहने से तथा गर्मी की बढ़ती तपन से ऐसा लगता है कि हम जल रहे हैं। इस कारण हमें बाहर निकालना पड़ता है बाहर निकलने में भी गर्मी का तापमान शरीर पर इतनी तेजी से लगता है कि शरीर पर जलन से महसूस होती है परिणामतः बढ़ती गर्मी का तापमान हम बिल्कुल सहन नहीं कर पा रहे हैं।

गुड़गांव में रहने वाले अरमान (परिवर्तित नाम) से बात करने के दौरान अरमान ने बताया हम बिहार के रहने वाले हैं और वर्तमान में गुड़गांव में अपने माता-पिता के साथ किराए की बस्ती में रहते हैं। माता-पिता कामकाज पर जाते हैं और हम घर पर ही रहते हैं। वर्तमान में भीषण गर्मी से हर किसी को समस्या पैदा हो रही है हम टिन शेड की बस्ती में रहते हैं ना ही हमारे पास पंखा है और ना ही कुलर है। धूप इतनी तेज पढ़ने लगती है कि हम एक मिनट अपनी झुग्गी के अंदर नहीं रुक पाते हैं इस वजह से बीमार होने का खतरा रहता है।बस्ती के लोग जब गर्मी को सहन नहीं कर पाते तो एकमात्र सहारा बचता है कि वह आसपास की छाया वाली जगह पर जाएं या आसपास के पेड़ पौधों के पास जाए। जब हम गर्मी से परेशान हो जाते हैं तो हमारा एक स्कूल का दोस्त है जो की इस गुड़गांव का ही रहने वाला है उसके घर में कूलर, फ्रिज व पंखा आदि सभी व्यवस्थाएं है हम वहां पर जाकर अपने आप को गर्मी से बचा पाते हैं। नोएडा सेक्टर 76 की बस्ती में रहने वाले बच्चों से बढ़ती गर्मी के बारे में जाना तो 16 वर्ष की बालिका ने बताया की हम झुग्गी बस्ती में रहते हैं हमारी पूरी झुग्गी बस्ती टिन शेड से बनी हुई है। लगभग आठ बजे के बाद धूप बढ़ती ही चली जाती है और सुबह के नौ बजे के बाद झुग्गी के अंदर बैठना बड़ा मुश्किल हो जाता है जब तक आसपास के पेड़ के किनारे नहीं बैठ जाते तब तक आत्मा को शांति नहीं मिलती। इतना ही नहीं गर्मी को कुछ हद तक तो हम बड़े-बड़े बच्चे बर्दाश्त कर लेते हैं परंतु छोटे बच्चों पर काफी असहनीय असर पड़ रहा है जिस कारण बस्ती में बच्चे बीमार भी पड़ रहे हैं और खांसी-जुकाम आदि के शिकार हो रहे हैं। जब हम पेड़ के नीचे आ जाते हैं तो जब हवा चलती है तब तब तो हमें सुकून मिलता है परंतु जब हवा बंद हो जाती है तो पेड़ के नीचे भी पसीना लगातार आता रहता है, अर्थात पेड़ और हवा ही हमारा गर्मी से बचने का एकमात्र सहारा है।

जयपुर में रह रही सोनाक्षी (परिवर्तित नाम) ने बताया जैसे हम अपने घर का घरेलू कामकाज करते हैं परंतु इतनी तेज धूप पड़ रही है कि घर से निकलने का मन ही नहीं करता हालाँकि घर का महत्वपूर्ण सामान लेने के लिए दोपहर में कभी-कभी जाना भी पड़ता है। ऐसे ही कुछ दिन पहले मैं कड़ी धूप में दुकान पर सामान लेने के लिए गई परंतु गर्मी के कारण अचानक से मुझे चक्कर आ गए और मैं बेहोश हो गई उस समय मैं बीमार भी थी और बेहोश होने के कारण मैं रास्ते में गिर गई तब कुछ आते-जाते लोगों ने मुझे देखा और पानी का छिड़काव करके मुझे होश में लाए और तब मैं काफी घंटे बाद घर पहुंच पाई और बेहोश होने का कारण घर वालों को बताया।

दिल्ली में रहने वाली बालिकाओं ने भीषण गर्मी को लेकर काफी कुछ बताया जिसके कारण सड़क एवं कामकाजी बच्चों पर इसका बहुत ज्यादा ही असर हो रहा है लेकिन जो बच्चे इस तपती धूप में अपना घर चलाने के लिए दिन भर काम करते उन पर तो क्या बीतती होगी? इस बारे में

शेष पृष्ठ 2 पर

पांचवीं बोर्ड परीक्षा को लेकर सड़क एवं कामकाजी बच्चों में छाया उत्साह

बालकनामा रिपोर्टर : काजल बातूनी रिपोर्टर : रहीम

जैसा कि हम सभी जानते हैं, राजस्थान के शिक्षा विभाग के निदेर्शों के अनुसार पांचवीं बोर्ड परीक्षा 13 मई 2024 से शुरू हो चुकी है। इसी क्रम में लेखसरा बस्ती से पांचवी कक्षा में नामांकित बच्चों में उत्साह एवं जोश देखने को मिला तो कुछ बच्चों में परीक्षा को लेकर घबराहट भी देखने को मिली। जब बालकनाम रिपोर्टर काजल ने बच्चों से बातचीत की तो बालक रहीम (परिवर्तित नाम) ने बताया कि मुझे पहली बार बोर्ड परीक्षा देने की खुशी तो थी ही लेकिन बस्ती एवं मेरी स्कूल से लगभग 9 किलोमीटर की दूरी पर लूनियावास विद्यालय में मेरा परीक्षा केंद्र था और परीक्षा का समय सुबह-सुबह जल्दी होने के कारण बहुत घबराहट हो रही थी, कि क्या मैं समय पर परीक्षा केंद्र पहुंच पाऊंगा और अपने अनुक्रमांक कैसे चैक करूगा, स्कूल कैसा होगा? इत्यादि प्रश्न बार - बार मेरे मन में

उठते थे लेकिन चेतना संस्था के कार्यकर्ता के सहयोग से समय से परीक्षा केन्द्र पर पहुंचा और बहुत ही अच्छे से परीक्षाएं दी। इसके अतिरिक्त बालिका नेहा (परिवर्तित नाम) ने बताया की मुझे तो बोर्ड परीक्षा के नाम से ही घबराहट होती थी लेकिन जब मैं परीक्षा देने गई तो मुझे अच्छा लगा क्योंकि वहां पर उपस्थित सभी टीचर बच्चों की मदद कर रहे थे जैसेः कौन सी कक्षा में बैठना है, परीक्षा कॉपी में रोल नंबर कैसे लिखना है इत्यादि। इतना ही नहीं बालिका दामिनी, नरगिस ने बताया की उनके अभिभावक बहुत खुश थे की बच्चे बोर्ड परीक्षा में शामिल हो रहे है कई अन्य बस्तियों के अभिभावको ने भी बच्चों की परीक्षा को लेकर काफी उत्साह दिखाया, बच्चों को तैयार करने से लेकर परीक्षा केंद्र तक पहुंचाने गए, इसके अतिरिक्त परियोजना के अंतर्गत सभी बच्चे कई दिनों से बोर्ड परीक्षा की तैयारी में लगे हुए थे और लगभग 50 सड़क एवं कामकाजी बच्चे इस बोर्ड परीक्षा में बहुत ही उत्साह के शामिल हुए।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

दिव्यांग मां की सहायता के लिए झाड़ू-पोछा करने को किशोरी हुई मजबूर

बातूनी रिपोर्टर-जहाना
बालकनामा रिपोर्टर- हंस कुमार

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार पश्चिमी दिल्ली के शकूर बस्ती का दौरा करने गए तो उन्हें वहां की बातूनी रिपोर्टर जहाना ने बताया की उसके घर के पास एक लड़की रहती है जिसने शिक्षा प्राप्त करने के अपने लक्ष्य का त्याग करते हुए अपने परिवार के लिए कुछ अर्जित अर्थात कमाने की भूमिका संभाली है। उसका नाम अनुप्रिया (परिवर्तित नाम) है और वो एक आर्थिक रूप से परेशान पारिवारिक पृष्ठभूमि से आती है। बालिका की माँ दिव्यांग है और काम करने में असमर्थ है, जबकि उसके पिता को शराब की लत है। एक दिन, उसके माता-पिता के बीच तीखी बहस के कारण उसके पिता को परिवार छोड़कर घर से बाहर जाना पड़ा, जिससे अनुप्रिया को अपनी माँ और खुद के भरण-पोषण करने का बोझ उठाना पड़ा। जब कोई और मदद करने वाला नहीं था, तो उसने पास की कोठियों में झाड़ू-पोछा का काम शुरू किया, जहां वह मामूली वेतन के बदले लंबे समय तक काम करती है। अपने अथक प्रयासों के बावजूद, वो अभी भी गुजारा करने और अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए संघर्ष कर रही है। हालाँकि वो अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने और गरीबी के चक्र से मुक्त होने का सपना देख भी रही है परन्तु उसके परिवार की वित्तीय बाधाओं और जिम्मेदारियों ने उसके पास अपनी महत्वाकांक्षाओं को रोकने के अलावा कोई विकल्प नहीं छोड़ा है। उसे जिन दैनिक संघर्षों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, उससे उसकी मानसिक और शारीरिक अवस्था पर

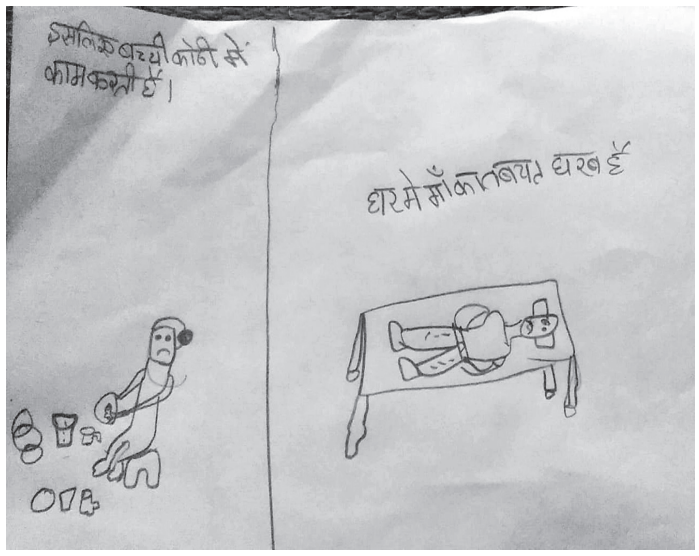

असर पड़ा है, फिर भी वह प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना जारी रखती है। यह वंचित समुदायों में कई नाबालिग बच्चों द्वारा सामना की जाने वाली कठोर वास्तविकताओं की एक स्पष्ट याद दिलाता है, जहां पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ अक्सर व्यक्तिगत विकास और आत्म-संतुष्टि की खोज को ग्रहण कर लेता है। बाधाओं का सामना करने के बावजूद, अनुप्रिया का अटूट दृढ़ संकल्प विपरीत परिस्थितियों में उसके साहस और ताकत के प्रमाण के रूप में काम करता है। जैसे-जैसे वो अपने दैनिक जीवन की चुनौतियों का सामना करती है, उसकी कहानी उन लोगों के लिए समर्थन और सहायता की तत्काल आवश्यकता की एक मार्मिक याद दिलाती है जो समाज में हाशिए पर हैं। यह उनके जैसे व्यक्तियों के प्रति अधिक जागरूकता और सहानुभूति के लिए कार्रवाई का आह्वान है, जो अपने और अपने प्रियजनों के लिए बेहतर भविष्य बनाने के लिए सभी बाधाओं के खिलाफ लड़ रहे हैं।

पत्रकार बैठकों के दौरान बच्चे सीखते हैं तरह-तरह की महत्वपूर्ण सीख

बातूनी रिपोर्टर निधि व रिपोर्टर किशन

जैसा कि बालकनामा के पत्रकार सड़क एवं कामकाजी बच्चों की समस्याओं को आप तक पहुंचाते हैं। चेतना संस्था के कार्यकर्ता जिस-जिस स्थान पर कार्य कर रहे होते हैं उस स्थान पर पत्रकार हर महीने दौरा करते हैं और उस दौरान बच्चों के साथ हर महीने बढ़ते कदम मीटिंग करते हैं। इस मीटिंग में बढ़ते कदम के सदस्य, बालकनामा के बातूनी रिपोर्टर और बालकनामा के लिखावट रिपोर्टर भी पहुंचते हैं। आइये इस खबर को हम और विस्तार से जानते हैं कि बालकनामा के बातूनी पत्रकार और लिखावट पत्रकार किस-किस विषय पर चर्चा करते हैं और बच्चों को कैसा लगता है? कई बच्चों ने चर्चा के दौरान अपनी राय में बताया की, जब बालकनामा के पत्रकार बच्चों के साथ बढ़ते कदम मीटिंग के दौरान चर्चा कर रहे थे तो कई बच्चों ने खुश होकर कहा कि जब-जब आप हमारे समुदाय में आते हो तब-तब हम आपको देखकर खुशी से भर जाते हैं। अब हम जानते हैं कि हर महीने किन-किन विषयों पर चर्चा की जाती है? बालकनामा के पत्रकार हर महीने अलग-अलग स्थान पर बच्चों के पास पहुंचते हैं और उनके साथ बढ़ते कदम संगठन जो कि सड़क और कामकाजी बच्चों का संगठन है उनके लिए मीटिंग का आयोजन करते हैं। बढ़ते कदम मीटिंग एक महीने में एक बार की जाती है और इस मीटिंग के अलग-अलग उद्देश्य भी होते हैं जैसे बढ़ते कदम की जानकारी देना, बालकनामा के बारे में अन्य बच्चों को विस्तार से बताना, चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर क्यों आवश्यक है इस विषय पर जानकारी देना, बच्चों के बाल अधिकार कितने हैं इस विषय पर जानकारी देना, सबसे बड़ा उद्देश्य यह होता है कि बच्चों के जीवन में क्या-क्या समस्याएं आ रही हैं इस विषय पर विस्तार से मीटिंग के दौरान जानते हैं। इसके अलावा बच्चों को तरह-तरह का खेल भी खिलाते हैं जैसे कितने भाई कितने, खो-खो, म्यूजिक चेयर, सेब केला संतरा, जाल मछली, आदि। जब पत्रकार एक स्थान पर बच्चों के साथ बढ़ते कदम मीटिंग कर रहे थे तो कई बच्चों ने बताया कि जब-जब आप इस स्थान पर आते हैं तो हमें काफी खुशी होती है। हम हर महीने आपका इंतजार करते हैं ताकि आप हर महीने आकर हमें हमारी परेशानियों को पूछते हैं और उन परेशानियों को बालकनामा में छापकर लोगों तक पहुंचाते हैं और आपकी मीटिंग के दौरान हम आपसे अच्छी-अच्छी बातें सीख पाते हैं जैसे पत्रकार की भूमिकाएं और बड़ों का सम्मान करना, शिक्षा पर ध्यान देना आदि। पत्रकारों ने बच्चों से सवाल किया कि यदि आपके यहां पर पत्रकार मीटिंग करने ना आए तो आपको कैसा लगेगा? तो बच्चों ने बताया कि यदि आप नहीं आते तो हमारा बिल्कुल मन नहीं लगता और तरह-तरह की अच्छी बात नहीं सीख पाते हैं, हम अपने घर में तो खेल खेलते हैं परंतु उसमें इतना मजा नहीं आता जितना आपके द्वारा मीटिंग में खिलाए हुए खेल में आता है और हम बच्चे चाहते हैं कि आप हमेशा मीटिंग करने आते रहे और हमारे चेहरों पर मुस्कान लाते रहे।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने सीखे वित्तीय साक्षरता के गुर, बनाए गुल्लक

बालकनामा रिपोर्टर : काजल
बातूनी रिपोर्टर : सोनिया

सड़क एवं कामकाजी बच्चों के जीवन को सरल और सहज बनाने के उद्देश्य से चमकते सितारे परियोजना के अंतर्गत संचालित शिक्षा केंद्रों पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ प्रत्येक माह जीवन कौशल कार्यशालाएं आयोजित की जाती है कयह कार्यशालायें बच्चों को वित्तीय साक्षरता,समय प्रबंधन, लैंगिक समानता, सहज एवं असहज स्पर्श,अच्छी एवं बुरी आदतों की जानकारी जैसे महत्वपूर्ण कौशल प्रदान करने के लिए सशक्त बनाती है। जब बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जामडोली कच्ची बस्ती का दौरा किया और बच्चों से उनकी समस्या और अनुभव जानने का प्रयास किया तब बालिका आनिया (परिवर्तित नाम) ने बताया की चेतना केंद्र में जीवन कौशल कार्यशाला के दौरान वित्तीय साक्षरता के बारे में जानकारी दी गई थी की बच्चों को शुरू से ही पैसों की बचत तथा पैसों का सही उपयोग और पैसों का सही निवेश कैसे करना चाहिए? इस कार्यशाला से मैंने पैसों की बचत करना सीखा और स्वयं चिकनी मिट्टी से गुल्लक बनाया और मैंने उसमें लगभग डेढ़ सौ रुपए इकट्ठा किया, इसके

अतिरिक्त बालक गौरव (परिवर्तित नाम) ने बताया की लगभग 300 रुपए गुल्लक में इकट्ठा किया है और अब मैं बैंक में खाता खुलवाना चाहता हूँ । इस कार्यशाला के माध्यम से जेडीए बापू बस्ती के लगभग 15 बच्चों ने स्वयं से गुल्लक बनाकर पैसा इकट्ठा करना शुरू किया और मांग्यावास बस्ती से कई बच्चे बैंक में खाता खुलवाने के लिए प्रेरित हुए है।

भीषण गर्मी का प्रकोप बच्चों पर कर रहा प्रहार, बढ़ती तपन से बच्चे हुए परेशान

पृष्ठ 1 का शेष

आप सोच भी नही सकते।

दिल्ली के स्लम एरिया में रहने वाली बालिका चांदनी (परिवर्तित नाम) रोज कड़कती धूप में हाथ में एक टोकरी में समोसों को लेकर गोदाम-गोदाम घूमकर बेचती है। उनके साथ उनकी कुछ बहनें भी यह काम करती है लेकिन वह अलग-अलग स्थानों पर समोसे बेचती है, गर्मियों की छुट्टियों से पहले वह स्कूल जाती थी तथा कक्षा आठवीं की छात्रा थी, उस वक्त भी वह स्कूल से घर आने के बाद समोसे बेचती थी। उनकी माताजी समोसे बना कर रखती है फिर वह और उसकी बहनें समोसे बेचने के लिए उन्हे दे देती है, यह बच्चे ऐसे ही पूरे दिन अलग-अलग बस्तियों में समोसे बेचते हैं। बालिका ने बताया कि जब हम यह कार्य करते हैं तो गर्मी के कारण हमें बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जब हम पैदल जाते हैं तो धूप शरीर के हर एक अंग पर पड़ती है और जिसके कारण पसीने आने लगते हैं और कभी कपड़ों से कभी रुमाल से पसीने को पोंछते हैं। बस्ती में समोसे बेचते-बेचते धूल-मिट्टी के कारण कपड़े और चेहरा काफी गंदा हो जाता है यह देखकर अधिकतर लोग समोसे लेने में भेदभाव भी करते हैं। यह देखकर हमें काफी बुरा लगता है। वैसे ही गर्मी इतनी तपन छोड़ रही है पर जो बच्चे इसमें भी तरह-तरह का कार्य कर रहे हैं उन पर इस गर्मी का क्या असर हो रहा है हमारे लिए इसका अंदाजा लगाना भी कठिन है। नोएडा के सेक्टर 78 में जब 15 वर्ष के बालक को रेहडी पर कार्य करते हुए देखा तो पत्रकारों ने बालक से बात की। बालक ने बताया की हम बिहार के रहने वाले हैं और नोएडा में आकर हमें यह काम मिला है जिसके तहत हम रेहडी पर तंदूरी रोटी बनाने का कार्य करते हैं। आपको ज्ञात ही होगा की तंदूर कितनी तेज आग फेंकता है और हमें उस तंदूर में तंदूरी रोटी बनाना पड़ती है जब हम उस तंदूर में हाथ डालते हैं तो लगता है कि शरीर जलने वाला है परंतु धीरे-धीरे वह कार्य करना पड़ता ही है और सहन भी करना पड़ता है, कड़ी धूप के कारण और शरीर पर प्रभाव पड़ता है। धूप का असर और जलती आग के कारण शरीर पसीने से भर जाता है और शरीर से बदबू भी आने लगती है, इतना ही नहीं जब शाम के समय कमरे पर जाते हैं तो कई बार पानी में बर्फ डालकर नहाना पड़ता है तब जाकर शरीर को संतुष्टि प्राप्त होती है। दिल्ली की शकूर बस्ती में रहने वाला कार्तिक (परिवर्तित नाम) रोज सुबह अपने दोस्तों के साथ कैंटीन का काम करता है जिसमें वह गाड़ी में समान रखकर कभी गुरुग्राम तो कभी नोएडा जाता है। वहाँ पर गाड़ी को खाली करके फिर वेटर का काम करने लगता है जिसमें वह लोगों को पानी और कोल्ड ड्रिंक सर्व करता है और उसके बदले में लोग उन्हे टिप के तौर पर 50-60 रुपए दे देते है और वह दिन के लगभग 200 -300 रुपए तक कमा पाते है। वह यह काम कई वर्षों से करते आ रहे हैं लेकिन स्कूल जब खुला था तो वह रात के आठ बजे अपने दोस्तो के साथ जाते थे और रात के दो-तीन बजे आते थे और सुबह में उठकर स्कूल जाते थे। उनका इस काम के करने के पीछे का कारण उनके घर की आर्थिक स्थिति खराब होना है। जब हम गाड़ी से सामान इधर-उधर उतारते हैं तो गर्मी के कारण कार्य करने का मन नहीं करता शरीर में थकान जैसा महसूस होता है परंतु घर को चलाने के लिए यह कार्य करना ही पड़ता है इस प्रकार अनेक स्थानों से कामकाजी बच्चों ने गर्मी से होने वाली समस्याओं को आप तक साझा किया है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

नाले में तैरती मिली नवजात शिशु की लाश, दहशत में बच्चे और समुदाय

बातूनी रिपोर्टर - रवि
बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

जब बालकनामा रिपोर्टर पश्चिमी दिल्ली के झुग्गी बस्तियों में दौरा करने गए तो उन्हे वहां के बातूनी रिपोर्ट रवि (परिवर्तित नाम) ने बताया की कुछ दिन पहले उनके इलाके में एक दुखद और दिल दहला देने वाली घटना को अंजाम दिया गया जिसमें एक नवजात बच्चे का शव नाले के किनारे पानी में तैरता पाया गया। इस खबर ने स्थानीय निवासियों खासकर बच्चो को स्तब्ध और भयभीत कर दिया, जो अब भय और अनिश्चितता में जी रहे हैं। माना जा रहा है कि यह शिशु कुछ ही घंटों का था, जिसे बच्चों के एक समूह ने नाले के पास खेलते हुए पाया, वहां मौजूद एक बच्चे ने बताया की उन्होंने नाले के किनारे पानी में तैरती हुई एक काली

पन्नी में नवजात शिशु का पांव देखा तो उन्हें कुछ अंदेशा हुआ तो उन्होंने तुरंत अपने अभिभावकों को घटना की जानकारी दी। बच्चों के अभिभावकों ने अधिकारियों को सूचित किया, जो घटनास्थल पर पहुंचे और शव को बाहर निकाला। प्रारंभिक जांच के अनुसार, बच्चे को जन्म के तुरंत बाद परित्याग कर नाले में मरने के लिए छोड़ दिया गया था। मौत का सटीक कारण अभी तक निर्धारित नहीं हुआ है, लेकिन यह स्पष्ट है कि यह एक जघन्य और अमानवीय कृत्य था। इस घटना ने झुग्गी बस्तियों के निवासियों को सदमे और अविश्वास की स्थिति में छोड़ दिया है। कई लोग अब डर में जी रहे हैं, अपने बच्चों की सुरक्षा और अपने समुदाय के भविष्य को लेकर चिंतित हैं। कुछ माता-पिता ने तो अपने बच्चों को घर के अंदर ही रखना शुरू कर दिया है, इस डर से कि आगे क्या होगा? स्थानीय अधिकारियों ने मामले की जांच शुरू कर दी है, लेकिन अभी तक किसी भी संदिग्ध की पहचान नहीं हो पाई है हालाँकि वे घटना के बारे में जानकारी रखने वाले किसी भी व्यक्ति से आगे आने और जांच में सहायता करने का आग्रह कर रहे हैं। जैसे-जैसे समुदाय इस दुखद घटना से जूझ रहा है, निवासियों में दुख और गुस्से की भावना बढ़ रही है। कई लोग उस मासूम बच्चे के लिए न्याय की मांग कर रहे हैं जिसने इतने क्रूर और संवेदनहीन तरीके से अपनी जान गंवा दी। नाले में नवजात बच्चे की खोज से उन निराशाजनक और गंभीर परिस्थितियों का पता चला है जिनमें झुग्गी-झोपड़ी क्षेत्र के कई लोग रह रहे हैं। यह कमजोर और हाशिए पर रहने वाले समुदायों की मदद करने और ऐसी दुखद घटनाओं को दोबारा होने से रोकने के लिए बेहतर सीख है जिसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

सिलेंडर फटने से लगी भीषण आग, बच्चे सहमे व दर्जनों लोग हुए बेघर

बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

जब बालकनामा रिपोर्ट हंस कुमार पश्चिम दिल्ली के शकूर बस्ती इलाके का दौरा करने गए तो उन्हें वहां पता चला की कुछ दिन पहले यहां झुग्गियों में भीषण आग लग गई थी, जिसमें पांच झुग्गियां पूरी तरह जलकर राख हो गईं। आग तब लगी जब एक महिला खाना पकाने के लिए गैस चूल्हा जलाने गई और गैस सिलेंडर लीक होकर फट गया, जिससे भीषण आग लग गई। घनी बस्ती होने के कारण आग तेजी से आस-पड़ौस की झुग्गियों में फैल गई। फायर ब्रिगेड को तुरंत घटनास्थल पर बुलाया गया, फायरफाइटर्स तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे और उन्होंने आग को बुझाने और आग को आगे फैलने से रोकने के लिए कड़ी मेहनत की। दुर्भाग्य से, जब तक आग पर काबू पाया गया, तब तक पांच झुग्गियां नष्ट हो चुकी थीं, जिससे कई परिवार बेघर हो गए। आग में कई लोग घायल हो गए और उन्हें इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। घायलों में बच्चे और बुजुर्ग भी शामिल थे, जो इस दौरान झुलस गए या धुएं के कारण बेहोश हो गए। झुग्गियों के निवासियों के पास अब पहने हुए कपड़ों के अलावा कुछ नहीं बचा है, क्योंकि उनके घर और सामान राख के मलबे में तब्दील हो गए हैं। आग का बच्चो पर गहरा प्रभाव पड़ा, इस घटना ने बच्चों को भोजन, पानी और आश्रय जैसी बुनियादी आवश्यकताओं तक पहुंच से वंचित कर दिया। चश्मदीदों के अनुसार, बच्चे अपने घर और सामान खोने के कारण सड़कों पर सोने को मजबूर है। आग के कारण उनकी स्कूल यूनिफॉर्म, किताबें और अन्य जरूरी सामान भी नष्ट हो गया जिससे वे स्कूल नहीं जा पा रहे और उनकी शिक्षा पर इसका बुरा प्रभाव पड़ा है। चिलचिलाती गर्मी में बिजली आपूर्ति में कटौती से बच्चों की परेशानी और बढ़ गई है वे रात भर सो नहीं पाए।हालाँकि आग से प्रभावित लोगों को आश्रय और सहायता प्रदान करने के लिए राहत प्रयास चल रहे हैं। अधिकारी आग लगने के कारणों की जांच कर रहे हैं और निवासियों से खाना पकाने के लिए गैस सिलेंडर का उपयोग करते समय सावधानी बरतने का आग्रह कर रहे हैं। वास्तव में यह घटना घनी आबादी वाले स्लम क्षेत्रों में रहने के खतरों और भविष्य में ऐसी त्रासदियों को रोकने के लिए उचित सुरक्षा उपायों की आवश्यकता की याद जरूर दिलाती है।

गरीबों के आशियाने जलकर हुए खाक

बालकनामा रिपोर्टर किशोर

गुरुग्राम के सेक्टर 54 में आग लगने के बाद अफरा-तफरी का माहौल है, कुछ परिवार तो यहाँ हाल ही के वर्षों में आए थे और कुछ बरसों से रह रहे थे जिन्होंने अपनी झोपड़ी बनाने के लिए वर्षों तक कड़ी मेहनत की थी और सारी जमा पूंजी गृहस्थी बनाने में लगा दी लेकिन हजारों की गृहस्थी का सामान कुछ ही घंटों में जलकर खाक हो गया। घटना के बाद छोटे और बड़े बच्चे भूखे-प्यासे घूम रहे हैं, घरों में खाने का कोई सामान नहीं बचा जिससे हर परिवार चिंता में डूबा हुआ है की अब इन हालातों में बच्चे कैसे पालेंगे? भूखे-प्यासे जीवन बिताना इन लोगों की मजबूरी हो गई है। इस तीन घंटे की आग ने इन लोगों को जीवन भर का दर्द दे दिया है, बच्चों और बड़ों के शरीर पर वही कपड़े बचे हैं जो उन्होंने पहन रखे थे, यह त्रासदी इतनी भयावह थी कि इससे उभरने में लोगों को वर्षों लग जाएंगे। इस बस्ती के लोगों का कहना है की ना तो हम लोगों का कोई बीमा है जिससे की बीमा वाले कुछ मदद करें

क्योंकि हमें इसकी जानकारी ही नहीं होती और ना ही आग से बचाव की कोई ट्रेनिंग मिलती है जिससे नुकसान काफी ज्यादा हो जाता है। इस दुर्घटना में लोगों के जरूरी दस्तावेज जैसे राशन कार्ड, आधार कार्ड भी जल के राख हो गए है क्योंकि हमारे पास कोई फायर प्रूफ बॉक्स नहीं है जिससे कि हम कम से कम दस्तावेज सुरक्षित रख सकें। हमारे घरों के प्लास्टिक के बर्तन सब पिघल-कर गल गए हैं, इस विनाशकारी घटना ने हमसे हमारा सब कुछ छीन लिया है। खाने का राशन जो भी भरवाया था वह सब जलकर राख हो गया है हालाँकि आसपास के कुछ लोग थोड़ी बहुत मदद कर जाते हैं जिससे कुछ गुजारा चल रहा है लेकिन बर्तन, कपड़े और राशन कहाँ से लायें? बच्चों को जल्दी भूख लगती है और एक जोड़ी कपडे से कैसे गुजारा करें? ऐसे ना जाने कितने सवाल मन में उठते है और कुछ समझ नहीं आता की हम सब बेघर लोग आखिरकार किससे मदद मांगे?

पिता के नशे की लत ने खोया अपना जीवन, दो मासूमों सहित परिवार की हालत गंभीर

बातूनी रिपोर्टर- सानिया

दिल्ली की सड़क किनारे झुग्गी बस्ती में रहने वाला एक खुशहाल परिवार जिसमें दो बच्चे और उनके माता-पिता साथ रहते थे। गांव से आने के बाद शुरूआती दिनों में बच्चो के पिता अच्छा कमाते थे और परिवार चलाते थे। लेकिन धीरे-धीरे नशे की बुरी आदतों की चपेट में आकर उनके पिता ने कमाना भी छोड़ दिया और नशा करने लग गए जिससे घर में कई तरह की मुसीबतें आमादा हो गई जैसे घर में खाना न होना, बच्चों की छोटी सी जरूरतों के लिए भी उन्हें कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा। इस कारण बच्चों की माता ने अपनी बड़ी बेटी जो कि 7 साल की है उसे अपने मायके उसकी नानी के पास भेज दिया और अपने छोटे बेटे जो कि 4 साल का है उसे अपने साथ रखा। अभी हाल ही में एक रोज की सुबह लगभग 4 बजे के आसपास घर पर दस्तक हुई, सभी ने बाहर आकर देखा तो पाया कि उन बच्चों के पिता अधमरी हालत में रेलवे पटरी पर पड़े हुए थे। बच्चों की माता उन्हें देखते ही बेहोश हो गई और परिवार वालों ने उन्हें पटरी से हटाया परन्तु जब तक वह उसे अस्पताल लेकर जाते तब तक उनकी मृत्यु हो चुकी थी। जांच के दौरान पता चला आपसी दुश्मनी में लोगो ने उसे बहुत बुरी तरह से वजीरपुर क्षेत्र की तरफ मारा और उ - 4 झुग्गी, केशव पुरम जहाँ मृतक का घर था वहां लाकर फेंक दिया। बच्चों को तो कोई अंदेशा भी नही था की उनके पिता

के साथ आखिर ये कैसे और क्यों हुआ? वह बच्ची जो सिर्फ सात साल की है उसने वीडियो कॉल के दौरान अपने पिता का शव देखा और उसका रो रो कर बुरा हाल था। वह तो अपने पिता को आखिरी बार करीब से देख भी नही पाई और उसका भाई जो सिर्फ अभी 4 साल का है वह अभी यही जानता है की उसके पिता पटरी पर घूमने गए है और आते ही होंगे। अतः नशे की लत और आपसी रंजिश में एक परिवार उजड़कर रह गया।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

अपनी मेहनत और लगन से मिला सड़क एवं कामकाजी बच्चों को पढ़ने का मौका

बातूनी रिपोर्टर-अजय
बालकनामा रिपोर्टर-सरिता

समाज के हर बच्चे के अंदर कुछ ना कुछ प्रतिभा जरूर छुपी होती है, ऐसे ही सड़क एवं कामकाजी बच्चे भी प्रतिभा के धनी होते है। आज हम आपको ऐसे ही बालक अजय (परिवर्तित नाम) के बारे में बताने जा रहे है। अजय की उम्र 10 वर्ष है जो मूलतः बंगाल का रहने वाला है, वह अपने माता -पिता और तीन भाई-बहनों के साथ वर्तमान में घसोला गाँव (गुरुग्राम) में रहता है। जब हमारी पत्रकार सरिता ने घसोला क्षेत्र का दौरा किया तो वहां अजय से बातचीत हुई जिसके दौरान बालक ने बताया कि मेरा बहुत दिनों से स्कूल में दाखिला नहीं हो रहा था तो चेतना संस्था के कार्यकर्ता हमें स्कूल ले गए। वहां के अध्यापकों ने हम बच्चों को बोला कि आप पहले अपने माता-पिता को लेकर आओ फिर तुम्हारा स्कूल में दाखिला होगा। वैसे हमारे माता-पिता काम करने की वजह से स्कूल नहीं जा पाते क्योंकि उन्हें काम पर छुट्टी नहीं मिलती लेकिन जब संस्था के कार्यकर्ता स्कूल के प्रिन्सिपल से मिले और एडमिशन के सम्बन्ध में उनसे बात की तो पहले उन्होंने कहा कि बच्चे का टेस्ट लेंगे तभी एडमिशन होगा। इसी क्रम में जब प्रिन्सिपल सर ने सवाल पूछे तो अजय ने सभी सवालों का अच्छे जवाब दिया तब उन्होंने उसी समय स्कूल में अजय को दाखिला दे दिया क्योंकि बच्चे ने सभी सवालों के जवाब बिल्कुल ठीक प्रकार से दिए जिस कारण स्कूल के प्रिंसिपल ने उसे पुरस्कार दिया और अजय को सम्मानित किया। स्कूल में दाखिला

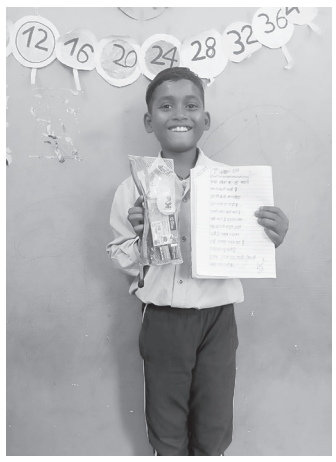

पाकर उसकी मेहनत रंग लाई क्योंकि वह बहुत मेहनती और पढ़ाई-लिखाई मैं होशियार है उसका स्कूल में दाखिला होने से उसके माता -पिता बहुत खुश हुए, अजय कि माता जी लोगों के घरों में झाड़ू-पोछा लगाने का काम करती है और पिताजी मजदूरी का काम करते हैं जिससे वह अधिक धन नहीं कमा पाते हैं परिणामतः अजय को हर जरुरत की चीज लेने के लिए सोचना पड़ता है और बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है क्योंकि उसके माता -पिता हर ख्वाहिश पूरी करने की क्षमता नहीं रखते हैं इसलिए अजय को सोच-समझकर पढ़ाई में खर्चा करना पड़ता है। अजय हर चीज में एक्टिव और होशियार है वह चेतना के वैकल्पिक शिक्षा केंद्र पर लीडर है जब अजय से हमारी पत्रकार ने बातचीत कि आप पढ़ाई में होशियार हो तो आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हो? तो अजय ने बताया कि मैं पुलिस ऑफिसर बनना चाहता हूँ और अपने देश की रक्षा करना चाहता हूँ।

बढ़ती गर्मी के कारण, गर्म पानी पीने को मजबूर हुए बच्चे

बातूनी रिपोर्टर राखी व रिपोर्टर किशन

वातावरण में आए बदलाव का असर हमें हर साल महसूस होता है, इसी परिप्रेक्ष्य में यदि वर्तमान की बात करें तो गर्मी का प्रकोप अब लगातार दिनोदिन बढ़ता ही जा रहा है। बढ़ती गर्मी के प्रकोप से सड़क एवं कामकाजी बच्चे किस तरह से अपना जीवन यापन कर रहे हैं बालक नामा के पत्रकारों ने जब कामकाजी बच्चों से बात की तो बच्चों ने बताया कि बढ़ती गर्मी में वे अपना जीवन बहुत कठिनाइयों के साथ बसर कर रहे हैं। नोएडा सेक्टर 101 के नजदीक झुग्गी बस्तियों में जब पत्रकार पहुंचे तो बस्ती में रहने वाली 11 वर्ष की बालिका ने बताया हम इस स्थान पर किराए की झुग्गी बस्तियों में अपने माता-पिता के साथ रहते हैं और हमारे माता-पिता कबाड़ी का कामकाज करते हैं। हमारी झुग्गी बस्ती टीन से बनी हुई है, बढ़ती गर्मी को देखकर गर्मी से काफी मात्रा में लगातार परेशानियां उभर रही है। बालिका ने बताते हुए कहा की दोपहर के समय इतनी तेज मात्रा में धूप हो जाती है कि झुग्गी में बैठना भी मुश्किल हो जाता है और मजबूरन बाहर निकल कर आसपास के पेड़ के पास जाकर बैठना पड़ता है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि धूप के कारण पानी काफी गर्म हो जाता है और जिस कारण वह पीया भी नहीं जाता है। हालाँकि मिट्टी का घड़ा तो हम खरीद सकते हैं और कई बार घड़ा खरीदे भी है पर वह जल्द ही टूट भी जाता है, कई घड़े बदल दिए हैं एक घड़ा 150 से 200 तक आता है परंतु बार-बार खरीदने के पैसे नहीं रहते जिस कारण बस्ती में अधिकतर लोग प्लास्टिक की 20 लीटर के पानी की बोतल में पानी रखते हैं फलतः धूप के कारण वह पानी गर्म हो जाता है। बालिका ने कहा कि माता-पिता सुबह से कामकाज के लिए

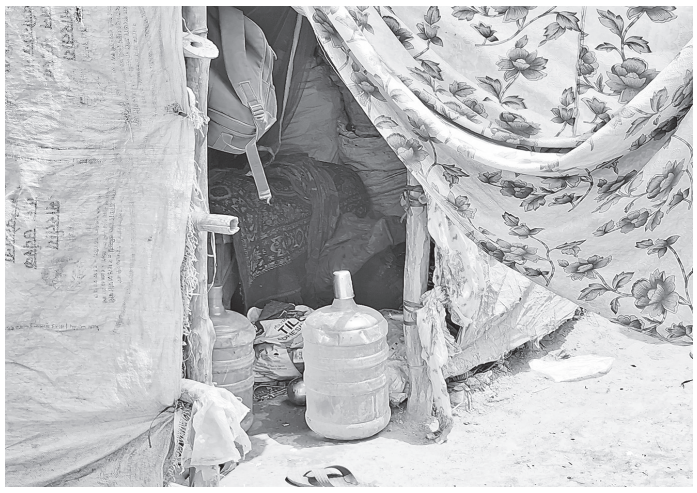

निकल जाते हैं और कभी-कभी वह घर में एक भी पैसा देकर नहीं जाते बस्ती में जिन व्यक्तियों के पास फ्रिज है या घड़ा है तो वह उससे ठंडा पानी पी लेते हैं परंतु हमारे पास ज्यादा पैसे ना होने के कारण हमें गर्म पानी पीना पड़ता है और शाम के समय पिताजी आसपास से जाकर बर्फ लेकर आते हैं तब जाकर ठंडा पानी पीते हैं जिससे थोड़ी राहत मिलती है।

अभिभावक ही धकेल रहे हैं बच्चों को नशे की ओर

बालकनामा रिपोर्टर:काजल, बातूनी रिपोर्टर:संदीप

जैसा कि आप सभी जानते हैं और हमने भी बहुत बार सुना है की संस्कृति को बचाने के लिए नशे पर रोक लगाना बेहद जरूरी है, इस तरह की बातें सुनने में बहुत अच्छी लगती है लेकिन हकीकत कुछ और ही है। ऐसी ही एक खबर सामने आई जिसके बारे कच्ची में जयपुर की कच्ची बस्ती में रहने वाले बातूनी रिपोर्टर संदीप ने बताया कि बस्ती में लगभग 4 से 5 अभिभावक को नशा करने की आदत है, वह प्रतिदिन सुबह- शाम शराब का सेवन करते हैं और अपने ही बच्चों को शराब की दुकान से शराब लेने के लिए भेजते हैं।
रिपोर्टर संदीप ने बताया की उसके मित्र प्रकाश (परिवर्तित नाम) के पिता भी बहुत शराब पीते हैं और एक दिन जब उसके पिता ने उसे शराब के ठेके से शराब लाकर देने को कहा तो उसने मना कर दिया और प्रकाश ने अपने पिता को बताया की नशा करना गलत है इससे शरीर खराब हो जाता है। इतनी बात सुनते ही प्रकाश के पिता ने उसको बहुत मारा और मार खाने के बाद भी आखिरकार प्रकाश को उन्हें शराब लाकर देनी ही पड़ी। ऐसे बस्ती में और भी बच्चों के माता-पिता है जो बच्चों से शराब मंगवाते है और जब भी उन बच्चों से शराब मंगवाई जाती है तो वह भी चुपचाप लाकर दे देते हैं। कभी - कभी अभिभवकों द्वारा शराब लाकर देने के बदले में बच्चों को एक-दो रुपए का लालच देकर उनसे शराब मंगवाई जाती हैं।

छोटे भाई-बहन की जिम्मेदारी का बोझ बना भारी, हुए शिक्षा से वंचित

बालकनामा रिपोर्टर : काजल,
बातूनी रिपोर्टर : रोहन

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जब मांग्यावास बस्ती के दूसरी तरफ की झुग्गियों में रहने वाले बच्चों से मुलाकात की तब बालक रोहन (परिवर्तित नाम) ने अपनी समस्या के बारे में बताया। लगभग 7 वर्षीय बालक रोहन अपने से 3 साल छोटे 2 भाई और 1 बहन की दिनभर देखभाल करता है। बालक बताता है की परिवार में कुल 6 सदस्य हैं इन सब का खर्चा मेरे पिताजी अकेले नहीं उठा पाते इसीलिए मेरी माँ पिताजी की मदद करने उनके साथ जाती है ताकि दोनों ज्यादा से ज्यादा कबाड़ इकट्ठा करके पैसे अधिक कमा सकें अर्थात मेरे माता-पिता सुबह जल्दी ही कबाड़ इकट्ठा करने चले जाते हैं हमारे घर में एक छोटी ट्रॉली है, सुबह से शाम तक जगह-जगह घूम कर उसमें कबाड़ा इकट्ठा करके लाते हैं और फिर घर आकर उस कबाड़ में से प्लास्टिक, लोहे का सामान अलग-अलग करते हैं और इस सामान को बेचकर जो पैसा मिलता है उससे रोजना जरूरतों के अनुसार घर में आटा ,सब्जी ही आ पाता है और यह भी तभी संभव हो पाता है जब मैं अपने भाई-बहनों का घर पर ध्यान रखता हूँ लेकिन दुर्भाग्यवश मैं इस जिम्मेदारी के कारण कभी भी विद्यालय पढ़ने नहीं जा सका। बालक ने बहुत ही उदासीनता से बताया की अगर मैं पढ़ने के लिए जाता हूँ तो मेरे बहन-भाई मेरे बिना नहीं रह पाएंगे, भले ही मैं छोटा अवश्य हूँ लेकिन मेरे ऊपर जो जिम्मेदारी वह बहुत बड़ी है इसलिए मैं सुबह से शाम तक अपने बहन- भाइयों को खाना खिलाना, पास की दुकान से चीज दिलाकर लाना, उनके साथ खेलना, इधर-उधर घूमना बस यही मेरी दिनचर्या रहती हैं, पर फिर मैं सोचता हूँ की काश मैं भी स्कूल जा पाता।

ढोल बजाकर परिवार की आर्थिक मदद करता मासूम

बालकनामा रिपोर्टर : काजल
बातूनी रिपोर्टरः विवान

जैसा कि हम जानते हैं ढ़ोलक बजाने से आनंद की अनुभूति और रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है। इसी क्रम में एक खबर मिली की ढ़ोलक बजाकर बालक विवान (परिवर्तित नाम) अपने परिवार की आर्थिक मदद करता है । इस खबर की पूरी जानकारी लेने के लिए बालकनामा रिपोर्टर काजल ने मांग्यावास बस्ती का दौरा किया और बालक विवान से बातचीत की तब विवान ने बताया की मेरी माँ त्योहारों पर घर-घर में ढोल बजाकर पैसे मांग कर लाती है और मेरे पिताजी जो कमाते हैं वह शराब में खर्च कर देते हैं इसलिए घर खर्च चलना बहुत मुश्किल हो जाता है । विवान ने बताया कि घर की आर्थिक तंगी और जरूरतों के कारण मैंने धीरे-धीरे ढोलक बजाना सीखा और फिर मेरी माँ के साथ ढ़ोलक बजाने उनके जाने लगा, और अब तो आलम ये है की मैं त्योहारों के अलावा माता रानी के जगराते एवं शादियों में भी ढ़ोलक बजाता हूँ जिससे मुझे ठीक-ठाक पैसे मिल जाते हैं अर्थात एक कार्यक्रम में ढोलक बजाने के 300 से 500 रू कमा लेता हूँ और जब शादियों का सीजन होता है तो महीने के 2000 से 3000 कमा लेता हूँ, इन पैसो को मैं अपनी माँ को घर खर्च के लिए देता हूँ ताकि हमारा पारिवारिक गुजर-बसर हो सके। विवान बहुत ही खुश होते बताता है कि मुझे पढ़ाई करना भी बहुत अच्छा लगता है इसलिए मैं अधिकतर रात में होने वाले कार्यक्रम में ढोल बजाने जाता हूँ और सुबह के समय बस्ती में संचालित चेतना संस्था के वैकल्पिक शिक्षा केंद्र पर पढ़ाई करता हूँ। विवान ने बताया की वह अपने छोटे भाई को बहुत अच्छी पढ़ाई करते हुए देखना चाहता है इसलिए वह अपने भाई को शिक्षा केंद्र पर पढ़ने के लिए साथ ले जाता है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बम विस्फोट की अफवाह से स्कूलों के छात्रों और अभिभावकों में मची अफरा-तफरी

बातूनी रिपोर्टर - सगीर
बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

हाल ही में एक झूठी अफवाह के कारण दिल्ली व आस पास के इलाकों के स्कूलों में बच्चों और अभिभावकों के बीच हुई भगदड़ ने समुदाय में भय और दहशत पैदा कर दी। टीवी और सोशल मीडिया पर स्कूल में रखे गए बम की खबर देखने के बाद डर के कारण अभिभावकों ने घबराहट में ये प्रतिक्रिया व्यक्त की। स्कूलों में विस्फोटक पदार्थ रखे जाने के खतरे के कारण माता-पिता अपने बच्चों को लेने के लिए दौड़ पड़े जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न स्कूलों में भगदड़ और भ्रम की स्थिति पैदा हो गई। कई बच्चे स्कूल जाने को लेकर डरे हुए और चिंतित महसूस कर रहे थे, कुछ ने घटना के बाद कई दिनों तक घर पर रहने का विकल्प चुना इससे स्कूलों में छात्रों की उपस्थिति पर भी काफी असर पड़ा। पश्चिमी दिल्ली के केशवपुरम के दौरे के दौरान, बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार ने साथी बातूनी रिपोर्टर सगीर से बात की, जिन्होंने अपने स्कूल में अराजक दृश्य का वर्णन किया। अपने बच्चों को लेने के लिए अभिभावक अचानक बड़ी संख्या में इकट्ठा हो गए, जिससे बच्चो में घबराहट और भय की स्थिति पैदा हो गई। एक बच्चे इम्तियाज (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जब अचानक बम की अफवाहें फैली, तो उसके पिता जो फैक्ट्री में मजदूरी का काम करते

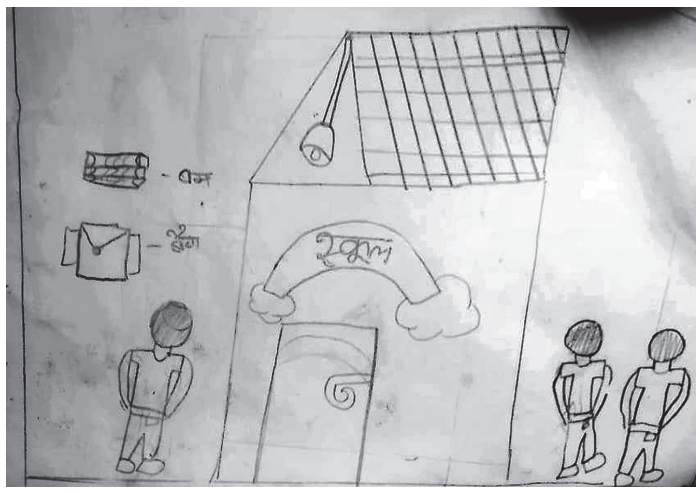

है वो न्यूज देखकर उसकी सुरक्षा को लेकर चिंतित हुए इसलिए उन्होंने तुरंत फैक्ट्री से छुट्टी ली और उसे लेने और घर ले जाने के लिए तुरंत स्कूल पहुंच गए। इसी तरह, एक अन्य बच्चे जुनैद (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उसकी माँ उसे स्कूल भेजने से डर रही थी और कह रहीं थी की अगर उनका बेटा स्कूल में सुरक्षित नहीं है तो उसे वहां भेजने का क्या मतलब है? कई बच्चे इन घटनाओं से रो रहे थे और कुछ सदमे में आ गए थे यद्दिप बाद में पुलिस जांच ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा की ये समस्त अफवाह निराधार थी और सभी स्कूल और बच्चे सुरक्षित रहे। अंततः जब माता-पिता अपने बच्चों की सुरक्षा के प्रति आश्वस्त हो गए तब उन्होंने बच्चों को स्कूल जाने की अनुमति दे दी।

शिक्षकों के सहयोग से सफल हो सका करिश्मा के शिक्षा का सफर

बालकनामा रिपोर्टर : आकाश,
बातूनी रिपोर्टर : करिश्मा

जैसा कि हम सभी जानते हैं हमारे समाज में माता-पिता व शिक्षक तीनों को बच्चों के जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण माना है क्योंकि मां-बाप उसका पालन-पोषण संवर्धन करते हैं तो शिक्षक उसके बौद्धिक, आत्मिक, चारित्रिक गुणों का विकास करते हैं। इसी क्रम में गणेशपुरी कच्ची बस्ती, जयपुर में रहने वाली 11वर्षीय बालिका करिश्मा (परिवर्तित नाम) ने बताया की मेरी मां दिव्यांग है और पिताजी का रोजगार नहीं होने के कारण हमें बस्ती छोड़कर गांव वापस जाना पड़ा और लगभग 10 महीने पहले मेरा विद्यालय में एडमिशन हो गया था लेकिन उस समय पारिवारिक समस्याएं होने के कारण मुझे स्कूल छोड़ना पड़ा और मैं अंततः अपने परिवार के साथ गांव चली गई लेकिन विद्यालय में लगातार

अनुपस्थित चलने के कारण कुछ समय के बाद मेरी कक्षाध्यापक जी का फोन आया और विद्यालय छोड़ने का कारण जाना तो मेरी मां ने अध्यापक को पूरी बात बताई तब टीचर ने कहा कि ठीक है हम करिश्मा का नाम विद्यालय से नही काटेंगे। लेकिन शिक्षक ने कहा की परीक्षा के समय जब भी आपको फोन किया जायेगा तब बालिका को परीक्षा दिलवाने के लिए स्कूल में लेकर आना होगा। फिर जब कुछ समय के बाद ही जब पिताजी ने वापस जयपुर आने का निर्णय लिया तो मैं बहुत खुश हो गई कि मैं वापस से स्कूल जा सकूंगी परन्तु इस बार विद्यालय से लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर ट्रांसपोर्ट नगर में हम रहने लगे और इतनी दूर से विद्यालय अकेला आना संभव नहीं था तब मेरी मां ने दिव्यांग होने के बावजूद भी हिम्मत दिखाई और मुझे रोज विद्यालय अपने साथ लेकर आती-जाती रही। जब तक मैं विद्यालय में पढ़ाई करती तब तक वह विद्यालय के पास ही गार्डन में पूरा समय बिताती और विद्यालय की छुट्टी होने के बाद ही मुझे घर लेकर जाती। यदि मेरी कक्षाध्यापक उस समय मेरा नाम काट देती और हमारी समस्या को नहीं समझती तो मैं आज शायद अगली कक्षा में नहीं जा पाती।

खिलौने खेलने की उम्र में, खिलौने ही बेचने को मजबूर कामकाजी बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर :आकाश,
बातूनी रिपोर्टर : रजत

जयपुर में बहुत सी कच्ची बस्तियों में रहने वाले कुछ परिवार ऐसे हैं जिनके बच्चे आज भी शिक्षा से दूर है, उनके बच्चे पढ़ने एवं खेलने की उम्र में दो समय की रोटी का जुगाड़ करने में परिवार की मदद कर रहे हैं । ऐसे ही जयसिंहपुरा खोर कच्ची बस्ती में रहने वाले परिवार के दो बालक रजत व अनिल (परिवर्तित नाम) खिलौनों से खेलने की उम्र में खिलौने बेचने को मजबूर है। बालक रजत ने बताया कि उनके पिताजी दिल्ली से कम दामों पर प्लास्टिक से बने खिलौने खरीद कर लाते हैं और पिताजी प्रतिदिन ठेले पर गली - गली घूम कर खिलौने बेचने का काम करते हैं और हम दोनों भाई मेलों में खिलौने बेचते है, हम अक्सर सड़क के किनारे और मंदिरों के बाहर पूरे दिन तपती गर्मी में इस उम्मीद के साथ बैठे हैं

की कि कोई भी आएगा और अपने बच्चों के लिए खिलौने खरीद कर ले जाएगा जिसके बदले हमें पैसा मिल जाएगा और हम अपने परिवार की मदद कर पाएंगे । बच्चों ने बहुत ही उदासीनता से बताया कि जो खुशी हमें खिलौने बेचने से मिलती है वह खेलने से नहीं मिलती क्योंकि खिलौने बेचने से हमें खाना ,पैसा और कपड़ा मिलता है। इसके अतिरिक्त ये बच्चे त्योहारों के समय में रंगोली, सजावट की वस्तुएं, प्लास्टिक के फूलों के गुलदस्ते इत्यादि भी बेचते हैं।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों की मेहनत लाई रंग

बातूनी रिपोर्टर काजल, ज्योति,
बालकनामा रिपोर्टर सरिता

मेहनत और लगन हर बच्चे को कामयाब बना देती है। हर कठिन परिस्थिति को भी अवसर में बदल देने की क्षमता रखने वाले हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे बहुत प्रतिभावान होते है। इसी प्रकार जब हमारी बालकनामा रिपोर्टर सरिता ने गुरुग्राम (हरियाणा) के चक्करपुर गांव की झुग्गियों का दौरा किया तो वहाँ काजल (परिवर्तित नाम) एवं ज्योति (परिवर्तित नाम) नाम की दो बच्चियों से बात हुई । बातचीत के दौरान काजल ने बताया कि मैं यहाँ अपने माता -पिता और दो भाई-बहन के साथ रहती हूँ। हम लोग उत्तरप्रदेश के रहने वाले है और रोजगार की तलाश में मेरे माता- पिता यहाँ आए है। यहाँ हम लोग तीन साल से गुरुग्राम में रह रहे है, पहले गाँव में हमारी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थीं जिस कारण हम लोग यहाँ रहने आ गए ' मेरी माताजी दूसरे लोगों के घरों में झाड़ू-पोछा लगाने का काम करती है और पिताजी पेंटर है। काजल ने आगे बताया कि, हम जब यहाँ आए तो मेरे माता -पिता हमें पढ़ाना चाहते थे परंतु हमारा कहीं स्कूल में दाखिला नहीं हो पा रहा था, फिर एक दिन हमें चेतना संस्था के बारे में पता चला और संस्था के वैकल्पिक शिक्षा केंद्र पर संस्था के सामाजिक कार्यकर्ता से बात हुई तो फिर वे हमारे साथ स्कूल में गये और हम दोनों बहनों का दाखिला करवा दिया ' जिसमें मुझे चौथी और मेरी बहन को दूसरी कक्षा मे दाखिला मिल गया। चेतना संस्था की वजह से आज मैं पांचवी और मेरी बहन तीसरी कक्षा में पहुँच गए है। हम नियमित स्कूल गए और नियमत ही संस्था की शिक्षा केंद्र पर आए और अपनी मेहनत और लगन से पढाई की जिसकी वजह से काजल ने अपनी कक्षा में तीसरा स्थान और ज्योति ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। आगे काजल ने बताया कि स्कूल के प्रिन्सिपल सर ने हम दोनों बहनों को पुरस्कार से सम्मानित भी किया। मेरे माता- पिता भी आज हम पर गर्व करते है। मेरा सपना है कि मैं पढ़ लिखकर एक अच्छी शिक्षिका बनूँगी और अपने माता- पिता का सपना पूरा करूंगी।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

नशीले पदार्थों से सुलगी आग, बच्चों की सूझबूझ ने बचाई कई जान

बातूनी रिपोर्टर- आकाश

नशा स्वयं के लिए जितना हानिकारक है उतना ही आसपास के लोगो के लिए भी नुकसानदेह है। जाने-अनजाने में ये नशीले पदार्थ आस-पास के माहौल को कितना नकारात्मक रुप से प्रभावित कर सकते है और जान के जोखिम को निमंत्रित कर सकते है इसका जीता जागता उदाहरण हाल ही में सामने आया जब बातूनी रिपोर्टर आकाश दिल्ली की मलिन बस्तियों के दौरे के दौरान कम्युनिटी में गए और देखा कि समुदाय की ही एक महिला अपने घर के सामान को समेटने में व्यस्त और परेशान थी। पास जाकर देखने पर पत्रकार हैरान रह गए क्योंकि उन्होंने देखा की घर ही के पास स्थित मैदान में सूखी घास पर आग लगने के कारण वो आग तेजी से फैल रही थी पत्रकार आकाश अपने दो मित्रों और कम्युनिटी के अन्य साथियों के साथ वहां गए और उसी समय अपनी

सूझ-बूझ से आग पर नियंत्रण पाने का प्रयास किया। उन्होंने आनन-फानन में जितना भी पानी उपलब्ध हो सका उसका आग बुझाने में इस्तेमाल किया और ईंधन सम्बंधित सामान को उस स्थान से दूर किया। आसपास के लोगों से बात करने पर आकाश को जानकारी मिली कि आग लगने का मुख्य कारण झाड़ियों में नशीली गतिविधियों की मौजूदगी है, वहां कई नवयुवक नशे हेतु माचिस आदि का उपयोग करते हैं इसी कारण समुदाय की महिलाएं भी उस रास्ते का उपयोग करने में कतराती हैं। इन उपद्रवी लड़कों की लापरवाही से ही घास में आग लगी और अंततः आग ने भीषण रुप ले लिया था और वहां मैदान के पास में ही कॉम्प्लेक्स भी स्थित है, परन्तु अंततोगत्वा समय से आग बुझाने के कारण आग भड़कने से बच गई और संभावित नुकसान से बचाव हो सका। हालांकि कई छोटे पौधे और सूखे पेड़ इस आग में नष्ट हो गए, समुदाय में उपस्थित बच्चों के लिए वह एकमात्र मैदान था, जहां बच्चे शाम को खेलते थे दिल्ली में भीषण गर्मी से वैसे ही लोगों का हाल बेहाल है, ऐसे में आग के कारण पेड़ पौधों की कमी से गर्मी इन आम लोगों के जीवन को और क्षति पहुंचाएगी।

पारिवारिक कर्ज चुकाने को, पानीपुरी के ढेले पर काम करने को मजबूर हुआ मासूम

बालकनामा रिपोर्टर : आकाश,
बातूनी रिपोर्टर : सोहेल

बचपन से ही बाल मजदूरी करने से बच्चों का स्कूल जाने का अधिकार छीन जाता है और वे पीढ़ी दर पीढ़ी गरीबी के दुष्चक्र से बाहर नहीं निकल पाते हैं । बाल मजदूरी शिक्षा में बहुत बड़ी रुकावट है, इसी तरह के बाल श्रम से पीड़ित बालक बलवीर (परिवर्तित नाम) की घटना सामने आई जब बातूनी रिपोर्टर सोहेल ने जयसिंहपुरा कच्ची बस्ती में रहने वाले 11 वर्षीय बालक बलवीर से उसके अनुभव एवं समस्या जानने का प्रयास किया तब बालक ने बताया कि लगभग 1 साल पहले मेरे पिताजी की टीबी बीमारी के कारण मृत्यु हो गई और माँ ने पिताजी की बीमारी के समय लोगों से ही बहुत पैसा उधार लिया था जिसके कारण कर्ज भी बहुत हो गया। पिताजी की मृत्यु के बाद माँ ने भीख मांगना शुरू कर दिया लेकिन भीख मांगने से भी परिवार में चार लोगों का पेट तक नहीं भर पाता है और भी बहुत खर्च घर में हो जाते हैं और मेरी 2 बहनें भी है जिनकी शादी के लिए पैसा इकट्ठा करना जरूरी

है। इन सब मजबूरी के कारण कुछ समय से मैंने काम करना शुरू किया और मैं सुबह 11:00 से रात्रि 8: 00 बजे तक एक होटल पर लगी पानीपुरी की स्टाल पर आलू छीलने, बर्तन धोने और कभी-कभी लोगों को पानीपुरी खिलाने का काम करता हूँ। इस काम के बदले में मुझे प्रतिदिन के 100 रुपए मिलते हैं, यह पैसे इकट्ठा करके जिन लोगों से माँ ने पैसे उधार लिए थे उनको दिए जाते हैं ताकि धीरे-धीरे करके कर्जा उतारा जा सके।

परिवार की आर्थिक सहायता हेतु चिकन की दुकान पर मासूम का बचपन जा रहा है अंधकार की तरफ

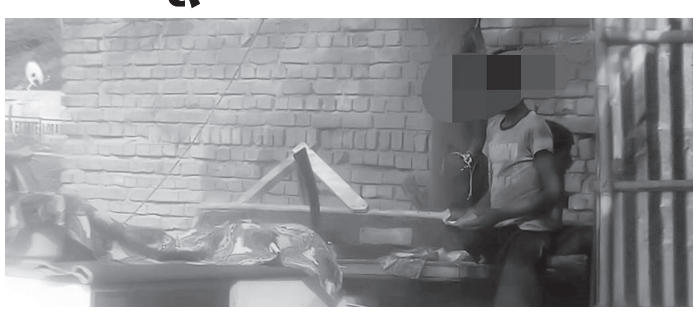

बातूनी रिपोर्टर मोनू, रिपोर्टर राजकिशोर

आज हम आपको एक ऐसे बच्चे के बारे में बताने जा रहा हूँ जो की 11 वर्ष का है और वह चिकन की दुकान पर काम करता है और वह जलवायु (गुरुग्राम) के पीछे वाली बस्तियों में रहता है। जब हमारे बालकनामा रिपोर्टर जलवायु की बस्ती में गए तो वहां पास में ही खड़े मोनू (परिवर्तित नाम) ने बताया की यहां पास में ही एक बच्चा रहता है जो की चिकन की दुकान पर काम करता है जब पत्रकार ने मोनू से पूछा कि वह चिकन की दुकान पर क्या काम करता है? तब मोनू ने बताया कि वो चिकन को पैक करने का काम करता है, जब हमारे बालक नामा अखबार के रिपोर्टर उससे मिलने के लिए बस्तियों में गए और उससे मिले तो उस बच्चे से पूछा कि आप यहां काम क्यों करते हो? आपकी यह उम्र तो पढ़ाई की है इसके बावजूद भी आप इतनी छोटी सी उम्र में काम कर रहे हो? फिर उस बालक ने कहा की मैं अपनी आवश्यकतों को पूरा करने के लिए काम करता हूँ, तो हमारे रिपोर्टर ने उनसे पूछा कि आपकी क्या जरूरतें हैं? हमारे रिपोर्टर ने उनसे कहा कि आपकी जरूरत तो आपकी पढ़ाई-लिखाई और शिक्षा है फिर उस बच्चे ने कहा कि नहीं पढ़ाई भी जरूरी है, लेकिन घर की जिम्मेदारी को कौन संभालेगा? जो पैसे मिलते हैं वह मैं घर पर अपने पापा को देता हूँ जो भी पैसा बच जाता है वह मैं अपने खर्चे के लिए रख लेता हूँ तो हमारे बालकनामा के रिपोर्टर ने उनसे कहा की हमारे जलवायु के बस्तियों में ही चेतना संस्था के द्वारा बच्चों को पढ़ाया जाता है और उनके लिए खेलने के लिए भी सामान दिया जाता है। केंद्र पर और पढ़ाई के लिए नोटबुक, पेंसिल, कटर, इरेजर आदि भी उपलब्ध किया जाता है और बच्चों को बाहर घूमने के लिए भी ले जाया जाता है, बच्चों को राजस्थान या अन्य स्थानों पर भी घूमने ले जाया जाता है और समय-समय पर बच्चों को पुलिस से भी मिलवाया जाता है ताकि बच्चे अपने मन की बात कह सकें। बच्चों को सभी तरीके की सुविधा दी जाती हैं, बच्चों का समय-समय पर मेडिकल चेकअप कराया जाता है, अतः आप भी वहां पढ़ने जाया करें यहां संस्था कोई फीस भी नहीं लगती है तो बच्चे ने कहा ठीक है मैं वहां जरूर पढ़ने जाऊंगा।

खुला नाला बन रहा हादसों का कारण, बच्चों का खेलना हुआ बंद

बातूनी रिपोर्टर ओम प्रकाश,
बालक नाम रिपोर्टर राजकिशोर

आज हम आपको एक ऐसी घटना के बारे में बताने जा रहें हैं जो घटना गुरुग्राम शहर के नाथूपुर एरिया की बस्तियों की है, यहाँ पर पिछले कुछ दिनों से एक नाले की खुदाई चल रही है। जिस जगह खुदाई चल रही है, उस झोपड़-पट्टी के बच्चों को बहुत सी दिक्कतो का सामना करना पड़ रहा है। जैसे की बच्चे जो की नाला की खुदाई वाली जगह के पास रहते है और उनका दिन भर का वही से निकास है, वो पहले वहां शाम होने पर खेलते भी थे, लेकिन अब खेलना-कूदना बंद हो गया है क्योंकि खुदाई होने के कारण बच्चे डरते है और वो वहां नहीं खेल पाते। इसके अलावा उनके पास आने जाने का कोई दूसरा रास्ता न होने के कारण वे वहीं से आते-जाते हैं

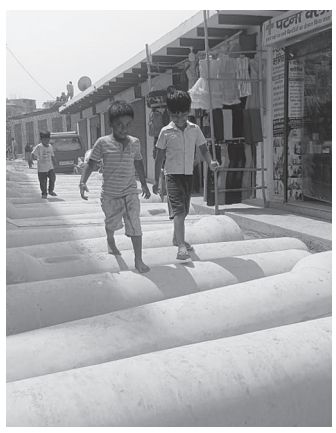

और शाम को वहीं बैठ कर आपस में बात करके एक दूसरे के हाल जानते है। एक दिन वहां एक बच्चे का पैर स्लिप होने के कारण उस नाले में गिर गया और नाला काफी गहरा था जिससे कि उस बच्चे को काफी ज्यादा चोटें भी आई यद्दिप उस बच्चे को नाले से निकाला गया और आस-पास के लोगों की मदद से फिर उस बच्चे को अस्पताल में भर्ती भी करवाया गया, बाद में आसपास के लोगों से ज्ञात हुआ कि उस बच्चे को हाथ में चोट आई है और मुंह के पास भी चोट लगी है जिससे कि उसको टांके भी लगे हैं। हमारे बालक नामा अखबार के रिपोर्टर जब उस बच्चे से मिलने के लिए गए तो बच्चों से पता चला कि वह उस जगह प्रतिदिन खेलने जाता था और उस दिन वह खेलते-खेलते नाले में जो सीमेंट का बना हुआ पाइप था वह बच्चा उसके ऊपर चल रहा था जिसकी वजह से उसका पैर फिसल गया जिससे की वह बच्चा नाले में गिर गया और उस बच्चे को काफी ज्यादा चोटें आई जिससे बच्चा बहुत ज्यादा सहमा हुआ है। उसने कहा की ये पाइप बहुत ज्यादा सरकते है जिससे इन पर गिरने का डर रहता है लेकिन अब हम क्या करें हमारे घर तो इनके पीछे ही हैं हमें तो मजबूरी में इनके ऊपर से आना जाना पड़ता ही है जिससे हमेशा ही हादसों की संभावना बनी रहती है।

बस्ती का गंदा नाला बना बच्चों के जीवन में खतरा

रिपोर्टर- आकाश

आज हम आपको ऐसे बच्चों की कहानी बताने जा रहे हैं जो रोजाना अपने जीवन में किसी ना किसी खतरे का सामना कर रहे है। यह खबर दिल्ली के शहीद कैंप में उपस्थित सड़क व कामकाजी बच्चों की है, इन बच्चों का जीवन वैसे ही बहुत संघर्ष पूर्ण होता है फिर भी ये अपने जीवन में आने वाली हर कठनाइयों का सामना डट करने की कोशिश करते है। शहीद कैंप का क्षेत्र लगभग डेढ़ किलोमीटर के दायरे में स्थित है, यहाँ एक बहुत बड़ा नाला है जिसमें गंदा पानी भरा हुआ है, आसपास जगह-जगह कूड़े के ढेर है, यहाँ नाले के पास बहुत से लोग अपने घरों का कूड़ा भी डाल देते है जिससे यत्र-तत्र बहुत बदबू आती है। यहां के अधिकतर बच्चे इस नाले के पास ही खेलते रहते है जिससे नाले

में व्याप्त गंदगी और बदबू की वजह से बच्चों के बीमार पड़ने का खतरा सदैव मंडराता रहता है। आज इस खबर में हम जिस बच्चे के बारे में बात करेंगे वह भी यहां और बच्चों के साथ खेलने ही आया था अर्थात यह कहानी 9 वर्षीय सन्देश (परिवर्तित नाम) की है जो अपने साथियों के साथ खेल रहा था और खेलते-खेलते वह और उसके साथी ऊपर नाले की तरफ पहुंच गए जहाँ जगह-जगह कूड़े का ढेर एकत्रित था। यहां बच्चों के साथ खेलते हुए वह जमीन पर गिर गया और उनकी मस्ती मजाक के वातावरण में बच्चे के कपड़े गंदे हो गए और वह नाले में नीचे उतरकर अपने कपड़े व हाथ पैर धोने लगा। हालाँकि वह इस बात से अनजान था की वहा फिसलन व दलदल है, अतः बच्चा अपनी मस्ती में ही अपने आप को साफ कर रहा था की अचानक उसका पैर फिसल गया और वह नाले के गहरे पानी में गिर गया। फिर क्या था उसके आसपास के बच्चों ने यह देखकर शोर मचाना आरम्भ कर दिया जिससे आसपास के कुछ बड़े लड़के उनकी मदद के लिए आगे आये व बच्चे को सुरक्षित पानी में से निकाल दिया गया इस घटना के बाद वहां उपस्थित सभी बच्चों में एक खौफ सा बैठ गया है।घटना ग्रसित बच्चे को बाहर निकल कर उसे घर पर लाया गया, काफी देर तक हाथ-पैर मसलने के बाद बच्चे को होश आया और वह अपने साथ हुई को विस्तार से बता पाया। हमारे बातूनी रिपोर्टर आकाश ने जब इस बात की छानबीन की तो वहां उपस्थित कुछ बच्चों ने बताया की, यहां ऐसा पहले भी कई बार हो चुका है अर्थात पता नहीं कब तक इस तरह बच्चों को खतरों से लड़ना पड़ेगा?

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

नशे का दामन छोड़ बालक ने पकड़ी शिक्षा की राह

बालकनामा रिपोर्टर :-सरिता, रिपोर्टर:-तन्मोंय सिंह

एक दिन बालकनामा रिपोर्टर सरिता जब पलड़ा ढाणी गुरुग्राम की बस्ती में विजिट के लिए गई तो वहां जाकर कम्युनिटी में लोगों से बातचीत की तो वहां उन्हें अफजल (परिवर्तित नाम) की माता जी ने बताया कि पहले मेरा बेटा कबाड़ा बीनता था और सारा दिन घूमता था बल्कि मेरा कहना भी नहीं मानता था। वह बात-बात में झगड़ा करने लगता था और कुछ नशेबाज लोगों के साथ मिलकर बीड़ी, सिगरेट व शराब पीता था तथा बदतमीजी से और गाली देकर बात करता था। वह घर से पैसे भी चोरी करता था जिन्हें वह नशे बाजी में उड़ा देता था, हम तो उसकी तरफ से बिल्कुल निराश हो गए थे ऊपर से उसे कुछ कहो तो झगड़ा करने लगता था। वह मेरा बिल्कुल भी कहना नहीं मानता था और मेरे अलावा उसे समझाने वाला भी कोई नहीं है, मेरे पति ने दूसरी शादी कर ली थी इसलिए मैंने ही बड़ी मुसीबत से कमा के उसे पाला-पोसा और तैयार किया है। मेरा पति हमसे अलग रहता है और हमारी कोई मदद नहीं करता, मैं इसको पढ़ा लिखा कर बड़ा आदमी बनना चाहती हूँ इससे मेरे बहुत से सपना जुड़े हुए हैं क्योंकि मैंने अपना जीवन तो दुखभरा काटा है पर मैं चाहती हूँ मेरे बच्चे का भविष्य उज्जवल हो लेकिन यह नहीं सुनता था, बात-बात पर मुझसे झगड़ा करता था। एक दिन चेतना संस्था की कार्यकर्ता आई और वह अफजल को अपने सेंटर

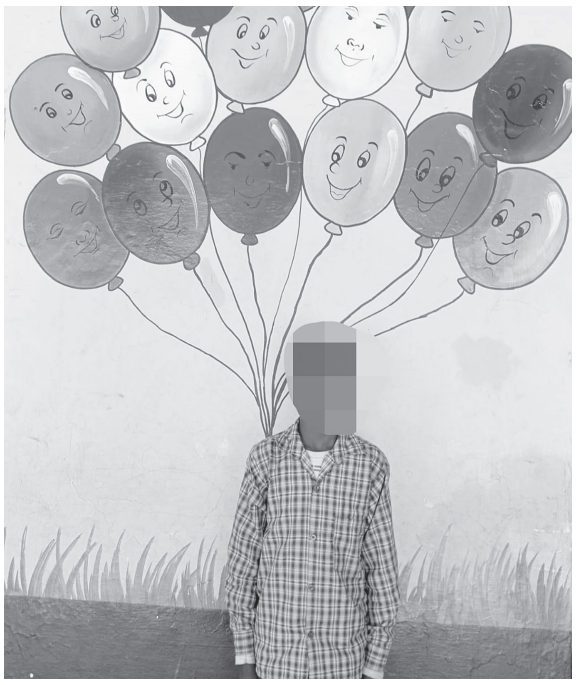

पर पढ़ने के लिए कहने लगी लेकिन इसने उनसे भी ढंग से बात नहीं की और कहा की मुझे पढ़-लिखकर कौन सा राजा बन जाना है? लेकिन कार्यकर्ता लगातार 1 महीने तक आई और अंततः एक दिन अफजल पढ़ने के लिए संस्था से शिक्षा केंद्र पर गया। चेतना संस्था के कार्यकर्ता ने अफजल को समझाया कि अभी आप बच्चे हो और आपके आगे पूरा जीवन पड़ा है। बिना पढ़े लिखे आपको कोई ढंग का काम नहीं मिलेगा और जब बड़े हो जाओगे तब आपको कोई पढ़ाएगा भी नहीं इस तरह वह उसे हर रोज सेंटर पर पढ़ाने के लिए लेकर जाने लगी। थोड़े ही दिनों में अफजल ने पढ़ना लिखना सीख लिया, वह साफ सफाई से रहने लगा, उसने बाल अधिकार जाने बढ़ते कदम की मीटिंग से उसके व्यवहार में परिवर्तन आ गया और उसने गलत लोगों की संगत भी छोड़ दी। उसके बाद अफजल का स्कूल में दाखिला कराया गया अब अफजल हर रोज स्कूल में पढ़ने जाता है और अब नशे की लत से भी धीरे-धीरे आजाद हो रहा है। उसके बाद चेतना संस्था की कार्यकर्ता ने अफजल का बैंक में अकाउंट भी खुलवाया। अफजल की माता ने बालकनामा रिपोर्टर सरिता को बताया कि मैं आप सब से बहुत खुश हूं कि मेरा बेटा अब स्कूल में पढ़ने जाता है और नशा करने वाले लोगों से भी दूर है। अब मेरा बेटा अच्छे से पढ़ लिख कर अपनी जिंदगी में आगे बढ़ेगा, जिसके लिये बढ़ते कदम और चेतना संस्था का योगदान बेहद सराहनीय है।

ट्रेन बनी डर का कारण, काँपी झुग्गियां-थर्राये बच्चे

बालकनामा बातूनी रिपोर्टर: शहजाद

अमूमन ट्रेन को आता-जाता देखकर वैसे तो सभी को बहुत खुशी होती है और ट्रेन का सफर सभी को बहुत अच्छा लगता है, छोटे बच्चे तो ट्रेन को देखकर बहुत उत्साहित हो जाते हैं। चलती ट्रेन से बाहर का मनोरम प्राकृतिक दृश्य देखना सभी को पसंद आता है लेकिन यही ट्रेन अब खुशी नहीं डर का कारण बन गई है, बच्चों के लिए यह एक खुशी नहीं बल्कि एक बुरे सपने की तरह हो गई है। जी हाँ ऐसे ही एक खबर मिली जब बालकनामा के रिपोर्टर ने पश्चिमी दिल्ली के बातूनी रिपोर्टर से बातचीत की तब बातूनी रिपोर्टर ने बताया कि पश्चिमी दिल्ली में लॉरेंस रोड जो की एक ऐसी बस्ती है जहां बच्चों के घर ट्रेन की पटरियों के पास में है तथा जहां बच्चों के साथ दुर्घटनाओं की बहुत ज्यादा संभावनाएं होती हैं। बच्चों के घर ट्रेन की पटरी के पास में बने हुए हैं जहां रोजाना दर्जनों ट्रेन आती-जाती रहती हैं, बच्चों को कुछ भी सामान लेने पर ट्रेन की पटरियों को पार करना ही पड़ता है लेकिन यही डर अब पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गया है जब से रोजाना वंदे भारत ट्रेन लॉरेंस रोड की पटरियों पर आने लगी है। यह ट्रेन पूरे दिन में दो - तीन बार लॉरेंस रोड की पटरियों पर आती है, ट्रेन की गति इतनी तेज होती है कि आसपास में धूल-मिट्टी उड़ने लगती है और लोगों की आंखों में चली जाती है, छोटे बच्चे उस ट्रेन की आवाज से डर जाते हैं, आसपास की जो झुग्गियाँ है वह हिलने लगती है, बच्चों की रात में नींद खुल जाती है जिस कारण वह समय से स्कूल नहीं पहुंच पाते हैं। बातूनी रिपोर्टर द्वारा बताया गया एक छोटी बच्ची जो की 4 साल की है वह एक दिन पटरी पर अपने भाई के साथ जा रही थी और अचानक से वंदे भारत ट्रेन आ गई, ट्रेन की गति इतनी तेज थी कि वह छोटी बच्ची बहुत डर गई और वह सहम कर वहीं स्तब्ध हो गई तब उसके भाई ने उसे ट्रेन की पटरी से खींचकर बचाया, वह बच्ची 2 बार वंदे भारत ट्रेन के नीचे आते-आते बची है। वंदे भारत ट्रेन की तेज गति से आने के कारण बच्चों को अब समुदाय में डर लगने लगा है, छोटे बच्चे अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं करते हैं। अंत में बालकनामा रिपोर्टर द्वारा बच्चों को समझाया गया और सुरक्षा का ध्यान रखने के लिए कहा, बच्चों को बताया गया कि वह ट्रेन की पटरी को ध्यान से पार करें, जब भी ट्रेन की आवाज आती है तो वह पटरियों से दूर हो जाएं और छोटे बच्चों का विशेष ध्यान रखें।

झुग्गियों में चोरी होने और आग लगने से मची अफरा-तफरी, बच्चे और परिवार हुए परेशान

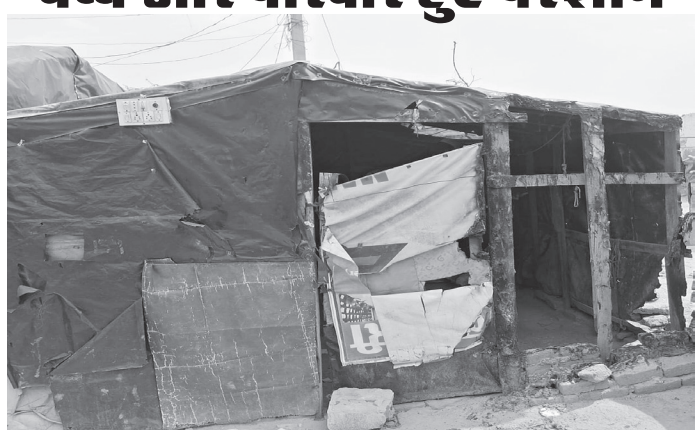

बालकनामा रिपोर्टर : काजल,
बातूनी रिपोर्टर: कान्हा

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर की बागराना बस्ती का दौरा किया और बच्चों से बातचीत की तो बातूनी रिपोर्टर कान्हा ने बताया कि बागराना बस्ती में रहने वाले लगभग 50 प्रतिशत लोगों को पास ही में 6 महीने पहले जेडीए (जयपुर विकास प्राधिकरण) फ्लैट्स में घर मिल चुका है लेकिन अभी भी 50 प्रतिशत ऐसे लोग है जो की बस्ती की झुग्गियों में ही रह रहे है । इन फ्लैट्स में अर्थात कुछ दिनों से लगातार सूने पड़े घरों में जो सामान पड़ा था वह चोरी होने लगा और बस्ती में दो-तीन परिवार जो कि शहर से बाहर शादी में गए हुए थे उनके घर चोरों ने ताला तोड़कर सामान चोरी कर लिया। इतना ही नहीं रात के समय झुग्गियों में आग भी लगा दी इन सभी अराजकता से बच्चे इतने डर गए हैं कि आधी रात में उनको इधर-उधर परिवार के साथ भागना पड़ा। इनमें से कुछ परिवारों के पास झुग्गियों में रहने के सिवा और कोई जगह नहीं है लेकिन इस तरह की घटनाएँ लगातार होने से बच्चों एवं बड़ो में के मन डर बैठ गया है और वह किराए पर घर ढूंढने लगे हैं। हालांकि लोगों ने हिम्मत दिखा कर पुलिस को रिपोर्ट लिखवा दी है और पुलिस से निवेदन किया है कि वह रात्रि में पहरा देने की व्यवस्था करवाए ताकि चोरों को पकड़ा जा सके और इन अराजक घटनाओं पर प्रतिबन्ध लगाया जा सके।

गलत संगत में फंसकर बच्चे हो रहे जुआ खेलने के शिकार

बातूनी रिपोर्टर-बिस्वाजीत, बालकनामा रिपोर्टर- सरिता

जब बालकनामा रिपोर्टर सरिता ने गुरुग्राम हरियाणा के चक्करपुर ग्राम की झुग्गियों का दौरा किया तो वहाँ एक बच्चे ने बताया कि हमारी झुग्गी में एक विद्युत (परिवर्तित नाम) नाम का बच्चा है जो बंगाल का रहने वाला है उसकी उम्र 13 वर्ष है वह वर्तमान में चक्करपुर की झुग्गियों में अपने परिवार के साथ रहता है ' विद्युत के माता-पिता बंगाल से रोजगार की तलाश में गुरुग्राम में रहने आए है तथा विद्युत की माता जी दूसरों के घरों में झाड़ू-पोछा लगाने का काम करती है और पिता जी मजदूरी का काम करते है। पिता जी बहुत अधिक शराब पीते है जिसके कारण घर

में बहुत ज्यादा लडाई झगड़ा होता है तथा कभी-कभी वो माताजी को मारते भी है जिसके कारण विद्युत के जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा एवं उसका मन पढाई में नहीं लगा और वह गली के गलत बच्चों की संगत में आ गया। बच्चे को धीरे-धीरे जुआ खेलने की लत लग गयी और वह दिन भर बड़े बच्चों के साथ जुआ खेलने लगा। बच्चे का मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता और ना ही स्कूल जाता है इसके अलावा वह मोबाइल में गेम्स खेलता रहता है और बीड़ी इत्यादि का सेवन कर नशा भी करता रहता है। उसे जिस दिन बीड़ी पीने को नहीं मिलता उस दिन वह घर से पैसे चोरी करके या फिर कबाड़ी बेच कर बीड़ी पीता और जुआ खेलता है। जुए खेलने के कारण बच्चे के व्यवहार और मनोदशा में बहुत परिवर्तन आया है जैसे झूठ बोलना, दोस्तों या परिवार से पैसे उधार लेना, चिड़चिड़ापन आदि ' एक दिन चेतना संस्था के कार्यकर्ता ने उस बच्चे से बात की और अपने संस्था के शिक्षा केंद्र पर जोड़ा परंतु वह वहां कुछ ही दिन गया और बाद में सेंटर जाना छोड़ दिया। अब वह दिन भर घूमता रहता है और माता पिता की बात भी नहीं मानता एक दिन उसकी मम्मी को गुस्सा आया और उसको उन्होंने किसी के साथ गाँव भेज दिया, वहाँ पर 5 से 6 महीने के बाद वह पुनः वापस गुरुग्राम आ गया क्योंकि वह वहां भी सब के साथ दुर्व्यवहार करता था। जब बालकनामा रिपोर्टर सरिता ने बच्चे से बात की और उसके बारे में जाना तो उसने कहा कि मेरा मन पढाई में नहीं लगता क्योंकि मेरे घर में लडाई-झगडा होता रहता है इस प्रकार मैं पढ़ाई से दूर चला गया ' अब मेरा मन बिल्कुल पढ़ने में नहीं लगता, मेरे आसपास के दोस्त जुआ खेलते है, कबाड़ा बेचते है और जो पैसे मिलते है उससे बीड़ी-सिगरेट खरीद कर जुआ खेलते हैा अतः अब मैं भी इस जुए के खेल में फँस गया हूँ।

चिलचिलाती धूप और भीषण गर्मी ने दिखाए अपने तेवर, बच्चे पड़ रहे बीमार

बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार दिल्ली के शिवाजी पार्क और केशवपुरम इलाकों का दौरा करने गए तो उन्होंने वहां देखा की गर्मी के कारण कई बच्चे डिहाइड्रेशन और कमजोरी से पीड़ित हैं। चिलचिलाती धूप के कारण विशेषकर शिवाजी पार्क जैसी झुग्गियों में रहने वाले बच्चों को और भी अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। तिरपाल व टीन की झुग्गियां काफी गर्म हो जाती हैं, जिससे अंदर रहने वालों के लिए यह असहनीय हो जाता है खासकर बच्चो के लिए। भीषण गर्मी से बचने के लिए लोग पेड़ों के नीचे शरण लेने को मजबूर हैं, लेकिन फिर भी गर्म हवा के कारण बच्चो को त्वचा संक्रमण की समस्या हो रही है। आसपास के इलाको में बड़े

पैमाने पर पेड़ो की कटाई से स्थिति और भी भयावह हो गई है। पेड़ों के कटने से प्राकृतिक छाया और ठंडक खत्म हो गई है, जिससे गर्मी और भी असहनीय हो गई है। पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने और ऑक्सीजन का उत्पादन करने के लिए आवश्यक हैं, लेकिन उनके निष्कासन ने ग्लोबल वार्मिंग वृद्धि में योगदान दिया है। ऐसे ही हालात केशवपुरम में भी हैं, जहां स्कूल से लौटते समय बच्चे अक्सर चक्कर खाकर बेहोश हो जाते हैं। कई बच्चे कमजोर हो गए हैं और कुछ को तो नाक से खून भी आने लगा है। हीटवेव (लू) के कारण बच्चों में हीटस्ट्रोक, डायरिया और गर्मी से संबंधित अन्य बीमारियों के मामलों में भी वृद्धि हुई है। जब पत्रकार ने कुछ बच्चों से उनके अनुभव समझने के लिए बात की तो शिवाजी पार्क में रहने वाले 8 साल के रोहन (परिवर्तित नाम) ने कहा, "मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं अंदर ही अंदर जल रहा हूँ और मैं अब अपने दोस्तों के साथ बाहर खेल भी नहीं सकता।"

केशवपुराम के पास स्कूल जाने वाली 10 साल की आयशा (परिवर्तित नाम) ने कहा, "मुझे हर समय सिरदर्द होता है और चक्कर आते हैं।" "काश पहले ही बारिश हो जाती।" 7 वर्षीय विजय (परिवर्तित नाम) ने कहा, "मुझे स्कूल जाने की याद आती है" जिसका स्कूल बढ़ती गर्मी के कारण बंद हो गया है। हालाँकि भीषण गर्मी को देखते हुए दिल्ली सरकार ने 50 दिनों की छुट्टी देने का फैसला किया है, जिससे सभी सरकारी स्कूल बंद हो गए हैं। सरकार, स्थानीय अधिकारियों और समुदाय के नेताओं को बच्चों पर हीटवेव के प्रभाव को कम करने के लिए समाधान खोजने के लिए एक साथ आना चाहिए। इसमें स्वच्छ पेयजल तक पहुंच प्रदान करना, अस्थायी कूलिंग सेंटर स्थापित करने पर विचार किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, जागरूकता अभियान चलाकर माता-पिता और बच्चों को गर्मी से संबंधित बीमारियों के खतरों और उन्हें रोकने के तरीके के बारे में सूचित करने में मदद कर सकते हैं। इस गंभीर मुद्दे का समाधान खोजने के लिए मिलकर काम करना चाहिए जैसे अधिक पेड़-पौधे लगाने के लिए बड़े पैमाने पर जागरूकता अभियान चलाने की आवश्कता है, साथ ही पेड़ो की कटाई पर पूर्ण रूप से रोकथाम की जरूरत है।

बच्चों के आधार कार्ड पर अभिभावकों के नाम गलत होने से बच्चों को स्कूल दाखिले में आ रही दिक्कतें

बातूनी रिपोर्टर सानिया और नासिर

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि आधार कार्ड (आधार कार्ड भारत सरकार द्वारा भारतीय नागरिकों को जारी किए जाने वाला एक पहचान पत्र है) व्यक्ति की एक आधारभूत पहचान है परंतु दुर्भाग्य से सड़क एवं कामकाजी बच्चों के पास वह भी उपलब्ध नहीं होती और जिनके आधार कार्ड बने भी है तो उनके आधार पर माता-पिता के नाम गलत होने की वजह से उनका दाखिला विद्यालय में नहीं हो पा रहा है। यह बात संज्ञान में तब आई जब पश्चिमी दिल्ली के एक सरकारी विद्यालय में एक बच्चे का दाखिला विद्यालय में करने के लिए सिर्फ इसलिए मना कर दिया गया क्योंकि बच्चे के पिता का नाम बच्चे के आधार कार्ड पर तथा बच्चे की माता के आधार कार्ड

पर पिता के आधार कार्ड से भिन्न था या कहें कि अंग्रेजी भाषा के अनुसार उसकी स्पेलिंग ही अलग थी और तीनो के आधार कार्ड पर अलग स्पेलिंग होने के कारण बच्चे को विद्यालय में दाखिले के लिए मना कर दिया गया। अक्सर इन बच्चों की जन्म पत्री एवं आधार कार्ड में भी माता के नाम की स्पेलिंग या बच्चे के खुद के नाम की स्पेलिंग भी भिन्न होती है क्योंकि माता-पिता पढ़े लिखे ना होने के कारण वह इस बात पर ध्यान नहीं दे पाते हैं इसकी वजह से बच्चों को विद्यालय में कई बार जाने के बाद दाखिला नहीं मिलता है। इसी कारण बच्चे का बैंक खाता भी नहीं खुल पाता है और ना ही उन्हें सरकारी सुविधा प्राप्त हो पाती है, जिन बच्चों का दाखिला पहले ही हो चुका है उन्हें भी चेतावनी मिलती रहती है की यदि आपके दस्तावेज सही नहीं हुए तो आपका नाम विद्यालय से काट दिया जाएगा। इस प्रकार सड़क एवं कामकाजी बच्चे बिना किसी गलती के ही सजा का पात्र बने रहते हैं। वे आधार कार्ड केंद्र ,बैंक, पोस्ट ऑफिस एवं एमएलए के दफ्तर के चक्कर लगाते रहते हैं। माता-पिता भी इस जानकारी से अनजान होते हैं और वह आधार कार्ड सही करवाने के लिए परेशान होते ही रहते हैं क्योंकि इन लोगों के पास कोई भी दस्तावेज नहीं होता है जिस से दस्तावेजों को सही कराया जा सके और सड़क एवं कामकाजी बच्चों के घर पर इतना पैसा भी नहीं होता कि वह यह काम करवा सकें क्योंकी इसमें कई बार बहुत पैसा लगता है इसलिए अधिकतर बच्चे ऐसी समस्या से जूझ रहे हैं जिसको सरकार के संज्ञान में लाना जरूरी है ताकि बच्चों की समस्या का कोई हल मिल सके। अतः हम गुजारिश करते हैं की बच्चों की इस समस्या की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित होना चाहिए।

शिक्षा के नए आयाम जानकर सड़क एवं कामकाजी बच्चों के शिक्षा की ओर बढ़ते कदम

बातूनी रिपोर्टर तनू

हर शहर की कुछ ना कुछ विशेषताएं होती हैं, हर शहर किसी न किसी कारण से अपनी चीजों के लिए मशहूर होता है। इसी प्रकार दिल्ली शहर भी बहुत सी चीजों के लिए जाना जाता है, यहां कहीं अनेक प्रकार की सुविधायें उपलब्ध है तो कहीं लोग अनेक समस्याओं से जूझ रहे हैं। कहीं विकास चरम सीमा पर है तो कहीं विकास का कुछ स्तर भी दिखाई नहीं पड़ता है, कहीं-कहीं अच्छी कॉलोनी या सोसाइटी बसी है तो कहीं झुग्गी झोपड़ियां नालियों के पास रेलवे ट्रैक के पास जड़ जमाये बैठी है। उन्ही में से एक उ-4 की झुग्गी लोरेन्स रोड केशव पुरम में बसी हुई है, यहाँ जल, बिजली, कच्ची बस्ती, खुली छोटी-बड़ी नालियाँ एवं शौचालय के अभाव जैसी अनेक समस्याएं तो आम है परन्तु सबसे बड़ी समस्या शिक्षा की है। यहां बच्चे शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं और शिक्षा की ओर अग्रसर भी होते है लेकिन उनके साथ विद्यालयों द्वारा नकारात्मक रवैया या तिरस्कृत व्यव्हार किया जाता है। बच्चे विद्यालय में पढ़ना चाहते हैं, विद्यालय में दाखिले लेने के लिए विद्यालय भी जाते हैं पर कभी दस्तावेजों के चक्कर में तो कभी किसी अन्य कारणों से एडमिशन नहीं किया जाता हैं। बच्चे विद्यालय अपने दाखिले के लिए जाते हैं तथा शिक्षा से जुड़ना चाहते हैं, शिक्षा की और अपना कदम बढ़ाना चाहते हैं पर विद्यालयो द्वारा उन्हें कभी दस्तावेजों के चक्कर में ,तो कभी सिर्फ प्लान बच्चों का दाखिला होगा यह

कहकर टाल दिया जाता है। विद्यालय द्वारा ड्रॉप आउट या किसी कारणवश बच्चों द्वारा विद्यालय छूट जाने वाले बच्चों का प्रवेश लेने में अनेक प्रकार की परेशानियां उत्पन्न की जाती हैं एवं जानकारी के अभाव में बच्चों का एडमिशन रह जाता है। इसी प्रकार बच्चों का नॉन प्लान एडमिशन का पता नहीं होना भी एक बड़ी समस्या है जिस कारण बच्चों के स्कूल दाखिले रह जाते हैं। इसी से प्रभावित एक बारह वर्षीय तनु (परिवर्तित नाम) हैं। वह शिक्षा प्राप्त करना चाहती है परन्तु पूरी एवं सही जानकारी ना पता होने के कारण शिक्षा से वंचित रह गई है। वह विद्यालय दाखिला कराने जाती है लेकिन हर बार किसी ना किसी कारण से उसे मना कर दिया जाता है, कहा जाता है यहां पर प्लान बच्चों का ही दाखिला होगा। कभी दस्तावेजों के चक्कर में तो कभी किसी अन्य कारणवश उसका दाखिला नहीं हो पाया था लेकिन नॉन प्लान के बारे में पता चलने के बाद की किस प्रकार दाखिला करवाया जाता है, बच्चों का फॉर्म कैसे फिल किया जाता है जिसमें विद्यालयों के नाम के साथ बच्चों के नाम की लिस्ट आती है फिर उस विद्यालय में जाकर बच्चों का दाखिला करवाया जाता है। नॉन प्लान की जानकारी मिलने से अनेकों बच्चों का दाखिला विद्यालय में होना संभव हुआ है उन्हें शिक्षा के एक और माध्यम के बारे में पता चला है। जो बच्चे शिक्षा के अभाव में अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे उन्हें नॉन प्लान के द्वारा विद्यालय जाने का एक और जरिया मिला है। बच्चों को शिक्षा के अवसर प्राप्त करने अर्थात शिक्षा प्राप्त कर अपने सपनों को पूरा कर दिखाने और साकार करने में मदद इससे काफी मदद मिली है।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में ~~हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार तथा अभिनव~~ इमिग्रेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471